As. Kumar Gour

Paper Publication- Personal

Year	2016	2017	2018	2019	2020-21
No.	-	-	01	01	04

Report- As. Kumar Gour

Year	Title of Paper	Name of Author	Department of Teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN/ISBN No.
2019	रामचरित मानस में जीवन मूल्य	As Kumar Gour	Hindi	भारतीय साहित्य की चिंतन भूमि	2019	ISBN 978-93-88130-15-8
2020	लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति	As Kumar Gour	Hindi	छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना	2020	ISBN 97881945 91702
2020	भारतीय साहित्य में अन्तर्निहित जीवन मूल्य	As Kumar Gour	Hindi	Vidhyavarta	01-08-2020 to July to Sep. 2020 Issue- 35, Vol-03	23199318
2020	नारी पात्रों में द्वंद एवं संकल्प की सशक्त हस्ताक्षरः कृष्णा सोबती	As Kumar Gour	Hindi	Vidhyavarta	01-10-2020 to Oct. to Dec. 2020 Issue- 36, Vol-01	23199318
2021	भारतीय साहित्य में अंन्तर्निहित जीवन मूल्य	As Kumar Gour	Hindi	वैश्विक जीवन मूल्य और गांधी		ISBN 978-93-89809-51-0

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

भारतीय साहित्य की चिन्तन भूमि

डॉ. संतोष गिरहे
डॉ. निखिलेश यादव

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला-राजनांदगांव (छ.ग.)

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
1329 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara

ISBN 978-93-88130-15-8

अनुक्रम

भारतीय साहित्य का वैशिष्ट्य 15
—रघुनाथ पाण्डेय

भारतीय साहित्य की अवधारणा 21
—डॉ. संगीता लोमटे

भारतीयता का समाजशास्त्र 25
—बी.के. भगत

भारतीय साहित्य की अवधारणा 28
—चैतराम यादव

भारतीय साहित्य की अवधारणा 32
—रवि जयसवाल

साहित्य और समाज : भारतीय परिप्रेक्ष्य 37
—माहेश्वरी

भारतीय साहित्य के मूलतत्त्व और विशेषताएँ 41
—डॉ. नीलम हेमंत वीरानी

मुर्दहिया : यथार्थवादी दृष्टि का परिचायक 46
—डॉ. आभा सिंह

कालजयी कृति 'रामचरितमानस' में तुलसी का मानवतावादी संदेश 51
—डॉ. कल्पना सतीश कावले

भारतीय साहित्य के कालजयी उपन्यास 56
—डॉ. जशु पटेल

भारतीय साहित्य : जीवन-मूल्य 64
—डॉ. दत्तात्रेय येडले

मानव, साहित्य और समाज 68
—डॉ. राममनोहर अं. मिश्रा

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 72
—प्रा. डॉ. प्रणिता फड

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 76
—बिन्दु ठाकुर, अशोक कुमार

भारतीय साहित्य की अवधारणा 80
—डॉ. हीरालाल शर्मा, डॉ. इसाबेला लकड़ा

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ 84
—डॉ. आर. एस. बांगड

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 88
—डॉ. मधुलता व्यास

जीवन-मूल्यों की शिक्षा और नये भारत का निर्माण 92
—डॉ. अनुसुईया अग्रवाल

हिन्दी साहित्य में उद्घाटित सामाजिक दिशाएँ 96
—राजकुमार लहरे

भारतीय साहित्य की अवधारणा : एक सिंहावलोकन 100
—डॉ. शक्तिराज

भारतीयता का समाजशास्त्र 104
—हर्षराज गुलाबराव पाटिल

भारतीय साहित्य का मूल स्वर 108
—नगिता रामटेके

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ 112
—डॉ. पायल कश्यप

भारतीय साहित्य की अवधरणा 116
—श्रीगीरे जयश्री बालाजी

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर 120
—प्रा. डॉ. परिवर्तिका अंबादे

'यमदीप' : हिजड़ों की व्यथा-कथा 124
—डॉ. लक्षेश्वरी

मानव जीवन की गाथा : 'गोदान' 128
—डॉ. अपर्णा पाटील

भारतीय रंग परिदृश्य और सुरेन्द्र वर्मा का 'द्रौपदी' नाटक 132
—प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर

भारतीय साहित्य की कालजयी कृतियाँ 137
—प्रा. प्रीति गौतम

भारतीय साहित्य में जीवन-मूल्य 140
—प्रा. डॉ. सुजितसिंह परिहार

भारतीय साहित्य के अमर साहित्यकार : प्रेमचन्द 144
—अभिलाषा

रघुवीर सहाय के काव्य में जीवन-मूल्य 147
—डॉ. मीनाक्षी वाणी

भारतीय साहित्य : कुछ चुनौतियाँ 151
—कुशलदास साहू

भारतीय साहित्य : समकालीन चुनौतियाँ 155
—मनीष कुमार कुर्रे

भारतीय साहित्य : दशा और दिशा 159
—मार्तण्ड शाही

भारतीय अस्मिता की पहचान : 'वापसी' एवं 'उसने कहा था' में सैन्य सम्बन्ध 163
—डॉ. राजेश कुमार मानस

एक कालजयी साहित्य कृति 'मानस का हंस' 167
—प्रा. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड

अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं में राष्ट्रवाद 172
—कैलाश कुमार

मीरा : भारतीय साहित्य की अनन्य साधिका 177
—शीला भार्गव

'आखिरी आवाज़' उपन्यास में लोक संस्कृति 181
—उमेंद कुमार चन्देल

'संस्कार' : आत्मखोज की प्रक्रिया और अध्यात्म की ओर 185
—डॉ. चेतनकुमार बी. मोदी

'चित्रलेखा' : भारतीयता की वैचारिक एवं मानवीय दृष्टि 189
—डॉ. जितेन्द्र कुमार एम. चौधरी

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 193
—रूपधर गोमांग्ये

डॉ. धर्मवीर भारती कृत अंधायुग नाटक में युगीन सन्दर्भ 197
—सरला सूर्यभान तुपे

भारतीयता का समाजशास्त्र 201
—डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 205
—माग्रेट कुजूर

भारतीय साहित्य की कालजयी कृतियाँ 209
—प्रा. राजेंद्र ज्ञानदेव नेनावरे

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 213
—श्वेता प्रदीप आंब्रे

भारतीयता और राष्ट्रीयता का दृष्टांत 217
—डॉ. प्रिया ए.

कालजयी नाट्यकृति : 'बिना दिवारों के घर' 221
—डॉ. शंकर दळवी

'अग्निगर्भ' उपन्यास में किसान-मजदूर संघर्ष 225
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे

भारतीयता और राष्ट्रीयता 228
—कल्पना दसारी

भारतीय साहित्य की चुनौतियाँ 231
—डॉ. हीरालाल शर्मा, डॉ. कल्याणी जैन

'संशय की रात' की प्रासंगिकता 233
—डॉ. माधव पाटील

भारतीय साहित्य और रंगमंच : नयी दिशाएँ 237
—मनोहर कुमार

रामचरितमानस में जीवनादर्श 242
—डॉ. नंदिनी तिवारी

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 247
—एकादशी एस. जैतवार

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 251
—डॉ. अम्बा शुक्ला

भारतीय साहित्य की अवधारणा 254
—अनीता जायसवाल

जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी 257
—अनीता पटेल

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 261
—डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा

भारतीय साहित्य एवं जीवन-मूल्य 265
—नीलम

स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'लगता नहीं है दिल मेरा' 268
—प्रिजी. एम.पी

कालजयी रचना 'उर्वशी' महाकाव्य में मानवीय प्रेम 272
—प्रा. डॉ. राहुल पुंडलिकराव वाघमारे

रामचरितमानस में जीवन-मूल्य 275
—एस. कुमार गौर

मध्ययुगीन संत साहित्य की प्रासंगिकता-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 279
—डॉ. सपना तिवारी

भारतीयता और राष्ट्रीयता 284
—डॉ. निलांबिके पाटिल

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

प्रकृति के रचयिता रवीन्द्रनाथ ठाकुर
—डॉ. गीता सिंह 286

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ
—डॉ. अमित शुक्ल 290

भारतीय सांस्कृतिक चेतना की प्रखर प्रवक्ता नीरजा माधव
—डॉ. अजय पाण्डेय 294

भारतीय साहित्य की कालजयी कृतियां : एक अध्ययन
—अमलापुरे सूर्यकांत विश्वनाथ 298

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य
—डॉ. अश्वनी कुमार ध्रुव 302

भारतीय साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ
—डॉ. नेहा कल्याणी 306

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ
—डॉ. सातप्पा शामराव सावंत 311

राजनीति के दायरे में पनपती अर्थनीति
—प्रत्यूष पी. 315

'मौनघाटी' : आदिवासी जीवन की दास्तान
—रेवती. जी 319

डॉ. रामकुमार वर्मा का ऐतिहासिक लेखन : 'दीपदान' एकांकी के सर्दर्भ में 323
—डॉ. राजनारायण अवस्थी

भारतीय लोकनाट्य परंपरा
—डॉ. सुधा जांगिड़ 327

"मोहन राकेश का कालजयी नाटक-आषाढ़ का एक दिन में चित्रित प्रेम भावना" 333
—प्रा. उत्तमराव येवले

विवेकी राय के निबंध-साहित्य में लोकजीवन और ग्रामीणता 339
—दिव्या वी.एल

भारतीय साहित्य का वैशिष्ट्य

रघुनाथ पाण्डेय

भारतीय साहित्य का अध्ययन करना किसी भी अध्येता के लिए नितान्त चुनौतीपूर्ण है। भारत, हर प्रकार से, विविधताओं वाला देश है। लिहाजा भाषा-साहित्यगत विविधताएं भी यहाँ भरपूर दृष्टिगोचर हैं। जब हम भारतीय साहित्य का अध्ययन करने की सोचते हैं, तब पहले तो यही तय करना कठिन हो जाता है कि भारतीय साहित्य मानें किसे? वह साहित्य जो भारत की राजनैतिक-भौगोलिक सीमा में रहने वाले लोगों द्वारा भारत की किसी भी भाषा में रचा जा रहा है, क्या यही है भारतीय साहित्य?

भारत की राजनैतिक-भौगोलिक सीमा का भी मतलब क्या होगा? वह सीमा, जो आज है या वह सीमा जो आजादी से पूर्व थी? वह सीमा जो पुरार्णकाल में थी, यह वह सीमा, जिसके अंदर कभी म्याँमार, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, श्रीलंका, बाँग्लादेश, आदि देश भी शामिल रहे? वर्तमान सीमा को ही मान लें, तब भी तो सवाल है कि क्या यह सीमा भारत-पाक की नियंत्रण रेखा (एल.ओ.सी.) तक मानी जाय, या अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा तक? लद्दाख और पूर्वोत्तर में जो भूमिभाग चीन के कब्जे में है, आखिर वहाँ भी तो साहित्य सिरजा जा रहा होगा, तो क्या वहाँ के साहित्य को भी भारतीय साहित्य माना जाना चाहिए?

भारतीय साहित्य के का अध्ययन करने के सम्बन्ध में बहुसंख्य विद्वानों का यह मत मान भी लिया जाय कि भारत की राजनैतिक-भौगोलिक सीमा में, भारत के बारे में, भारतीय नागरिकों द्वारा रचे गये साहित्य को सामान्यतया भारतीय साहित्य के दायरें में रखा जाना चाहिए, तब भी समस्या स्वतः निष्पादित नही हो जाती। भारत एक विशाल राष्ट्र है—क्षेत्रफल की दृष्टि से भी और जनसंख्या की दृष्टि से भी, सभ्यता-संस्कृति की दृष्टि से भी, इतिहास की दृष्टि से भी। इसका विराट व

सहज प्रवृत्ति है। यह पशु-जगत में भी नैसर्गिक रुप में व्याप्त है। 'काम' में चंचलता प्रमुख है किन्तु पुरुष जब अंतर को भिगो कर एकनिष्ठ बन जाता है तब उसे प्रेम की संज्ञा से अभिहित करते है। 'उर्वशी' प्रेम मनोविज्ञान पर आधारित महाकाव्य है प्रेम की विभिन्न स्थितियों का परिचय, प्रेम में संवेगों की स्थिति, मनःस्थिति आदि इस काव्य की विशेषताएं हैं।

पुरुरवा तथा उर्वशी की मानसिक शक्तियों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान, उनके पारस्परिक वार्तालाप, दैहिक क्रिया-प्रतिक्रियों के माध्यम से व्यक्त हुआ है। उर्वशी के आंतरिक एवं बाह्य जीवन में कोई अंतर दृष्टिगोचर नहीं होता उसमें द्वन्द्व नहीं हैं। यह उसके मानसिक पक्ष का द्योतक है। इसके अतिरिक्त उसके दैहिक भोग की प्रबल इच्छा, दूसरे प्रेम के विषय में उनका कहना है कि वैसा प्रेम तन तथा मन दोनों को एक बना देता हैं। उसका सुकन्या से कहना है कि जहां तक मन में किसी प्रकार की मलिनता रह जाए वह प्रेम ठीक नहीं बल्कि वैसा प्रेम श्रेष्ठ है, जहॉ मन को तो खोना ही पड़ता है बल्कि अंग-संज्ञा भी शून्य हो जाती है। तीसरे प्रकार का प्रेम हमारे भारतीय समाज में माता-पिता द्वारा विवाह-बंधन में बांधने के पश्चात प्रारम्भ होता है। वह कभी-कभी एकपक्षीय भी रहता है इसमें आत्म स्वीकृति का अभाव भी रहता है। पुरुरवा तथा औशीनरी का प्रेम भी एकपक्षीय है।

वास्तव में 'उर्वशी' में प्रेम का चित्रण विविध रूपों में हुआ है। 'उर्वशी' में प्रेम जहां दैहिक सीमाओं में रहा है वहां आध्यात्मिक धरातलों पर भी गया है, जहां प्रेम ने का मानुभूतियां की है, वहां वह संतति रूप में भी सफलीभूत हुआ है।

'उर्वशी' के प्रेम मनोविज्ञान पर विचार करने पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि 'उर्वशी' का जो मूल ढांचा है वह प्रेम के विभिन्न प्रकारों पर आधारित है। सम्पूर्ण कृति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेम सन्दर्भो को विभिन्न चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। मन की सूक्ष्म प्रवृत्तियां, संकेतो, भाव, तरंगो, संवेगों या दैहित क्रियाओं के द्वारा प्रकट किया गया है। प्रेम के उभयपक्षीय संकेतों को भली भांति दर्शाया गया है। प्रेम के समस्त गुण यथा उल्लास, ममता, अभिमान, विश्वास, अभिलाषा, उन्माद का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

सन्दर्भ

1. उर्वशी–रामधारी सिंह 'दिनकर'
2. इन आउट लाइन आफ साइको–एनालिसिस, फ्रायड

रामचरितमानस में जीवन-मूल्य

एस. कुमार गौर

अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिस पर उसका वास्तविक रूप प्रतिबिंवित होता है। इस दृष्टि से भारतीय साहित्य सदा समृद्ध रहा है। समाज एवं संस्कृति के पारस्परिक समन्वय से साहित्य का निर्माण होता है। समाज एक ओर व्यक्तियों के विचारों को दर्शाता है। तो संस्कृति जीवन-मूल्यों को। चाहे वह जीवन-मूल्य व्यैक्तिक हो, पारिवारिक हो या सामाजिक, हम यह कह सकते है कि साहित्य जीवन-मूल्य की संवाहिका है।

साहित्यकार स्वयं एक युग की घटना होता है, वह अपने काल की घटनाओं, परंपराओं, इतिहास को अमिट करता है। उनकी रचनाएं अपने समाज एवं संस्कृति को आगामी पीढ़ियों को दे जाती हैं। जब किसी साहित्य कार द्वारा लिखित व्यहारिक बातें लोक में समाविष्ट हो जाती है, तब वह किसी सामाज की परंपराओं एवं संस्कृति के रूप में मान्य हो जाती है। सांस्कृतिक संमृद्धि एवं सम्पन्नता के साथ जीवन-मूल्यों की दुशाला ओढ़े साहित्य सदैव समाज के लिए प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

भारतीय साहित्य जीवन-मूल्यों की अमूल्य निधि है। जो मानव जीवन का आधार है। आज भारत पूरे विश्व में अपनी साहित्यिक समृद्धि एवं जीवन-मूल्यों के लिए जाना जाता है। अनादिकाल से वर्तमान तक भारतीय संस्कृति जीवन-मूल्यों से परिपूर्ण रही है। इसलिए भारत को विश्वगुरू का पद मिला हुआ है। न जाने कितने वर्षों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहे, कितने आक्रमण को हमने सहन किया, युद्ध देखे...कितनी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का पतन हुआ लेकिन हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं परम्पराएं आज भी जीवित है, और आगे भी सदैव बनी रहेंगी। हमारी

सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता हमारे जीवन-मूल्यों का बोध कराती है। लार्ड मैकाले ने कहा था कि–"मैने संपूर्ण भारत में विचरण किया लेकिन मुझे यहां न कोई भिखारी, न कोई लूटेरा और न कोई चोर मिला। यहां के लोगों में उच्च नैतिक मूल्य है। जब तक हम उनके इस नैतिक मूल्य को और उनकी पुरानी शिक्षा पद्धति को खत्म नहीं करेंगे । तब तक हम भारत पर शासन नहीं कर सकते। जैसा कि हम चाहते हैं।"[1] अंग्रेजो की धारणा थी कि भारतीय मूल्यों को नष्ट कर ही हम यहां शासन कर सकते हैं। ब्रिटिश संसद में 02.02.1835 को उनके द्वारा कहा गया यह कथन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महत्व को प्रमाणित करता है।

भारतीय साहित्य में जीवन-मूल्य इस तरह घुला-मिला है, जहां से इनको निकाल पाना कल्पना से परे है। भारतीय साहित्य में जीवन-मूल्य भारतीय दर्शन का आधार है। इसी कड़ी में गोस्वामी तुलसी दास विरचित रामचरित, मानस एक महाकाव्य, के रूप में एक युगबोध साहित्य के, रूप में जीवन-मूल्यों की विशिष्ट व्याख्या करती है। तुलसीदास ने अपनी इस रचना के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि लोक जीवन को नई दृष्टि दी है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में स्थापित किया है। आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, प्रजापालक सखा, लोकरक्षक के रूप में उनके विराट व्यक्तित्व का चित्रण किया है। परिवार के मुखिया को किस प्रकार सभी के लिए समान दृष्टि एवं स्नेह रखना चाहिए, इसके महत्व को रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं कि–

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहूं एक।
पालइ पोशइ सकल अँग तुलसी सहित विबेक।।[2]

तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस के उत्तर काण्ड में रामराज्य की कल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया है। आदर्श समाज कैसा होना चाहिए तथा राजा-प्रजा के क्या-क्या कर्तव्य होने चाहिए? वे इस प्रसंग में लिखते हैं–

दैहिक-दैविक भौतिक तापा। राम राज नहि काहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।[3]

राम राज्य में सभी लोग परस्पर प्रेम से रहते हैं, अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं। वेद एवं लोकशास्त्र के अनुरूप आचरण करते हैं। उनके राज्य में कोई दरिद्र, विद्याहीन, रोगी, दम्भी नहीं हैं। सभी धर्म पालन में रत है। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि–

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोई अवुधन लच्छन हीना।
सब निर्दभ धर्म रत पुनी। नर अरू नारि चतुर सव गुनी ।।[4]

भरत जैसे आदर्श भाई के भातृत्व प्रेम को स्थापित करते हैं जिसको युवराज घोषित किये जाने के बावजूद भी वे राजसिंहासन छोड़कर अपने बड़े भाई श्रीराम की चरण पादुका को राजसिंहासन में स्थापित कर स्वयं वन को चले जाते हैं। आदर्श पत्नी के रूप में सीता के चरित्र का चित्रांकन किया है जो स्वयं राजवधू होते हुए भी 14 वर्ष के वनवास में महलों का सुख छोड़कर अपने पति के साथ वनगमन को सहज स्वीकार करती है एवं प्रत्येक चुनौतियों का सामना करते हुए एक आदर्श पत्नी एवं पतिव्रता नारी का धर्म निभाती है ।

तुलसी ने अपने काव्य में सभी आवश्यक मानवीय गुणों दया, क्षमा, करूणा, परोपकार, प्रेम, सहिष्णुता आदि का वर्णन किया है । इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति से ही अच्छे समाज का निर्माण हो सकता है। तुलसी के राम इन्ही गुणों से विभूषित है, इसलिए वे कहते हैं। केवल राम ही उनके संकट मोचन हैं–

एक भरो सो एक बल कक आस विस्वास।
एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास।।[5]

तुलसी के राम अवतारी हैं, जो संसार में धर्म की स्थापना एवं अधर्म के नाश हेतु मानव शरीर धारण किये हुए हैं–लोकरक्षक और लोकनायक के रूप में उनके चरित्र की स्थापना करते हुए करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि–

जब-जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब-तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।[6]

लक्ष्मण भी अपनी पत्नी उर्मिला एवं राजदरबार के सुख को छोड़कर अपने बड़े भाई की सेवा के लिए वनवास जाने का निश्चय करते हैं एवं उनके प्रत्येक कार्य में अपना सहयोग प्रदान करते हैं। एक सखा के रूप में हनुमान श्रीराम के प्रत्येक कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं। वानरों की सेना की सहायता से लंका विजय जहां एक ओर सामाजिक भावना का बोध कराती हैं, तो वहीं दूसरी ओर नकारात्मक शक्तियों का, विषम परिस्थितियों में किस प्रकार मिल जुलकर सामना करना चाहिए यह शिक्षा भी प्रदान करती हैं। सच्चे मित्र को किस तरह अपनी मित्रता निभानी चाहिए इसका प्रसंग प्रस्तुत करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं–

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरू समाना।।[7]

श्रीराम चरित मानस में विभीषण द्वारा अन्याय, असत्य का साथ छोड़कर सत्य एवं न्याय का पक्ष लेकर उनका विरोध करना दिखाया गया है। सीताहरण को गलत बताया जाना तथा इसके लिए स्वयं मंदोदरी द्वारा अपने पति रावण का विरोध करना एवं सीता के प्रति संवेदना प्रकट करना नैतिक मूल्य का ही उदाहरण है।

आज के सन्दर्भ में हम पाते हैं कि वास्तविक जीवन से जीवन-मूल्य अपघटित हो रहे हैं । नैतिक सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा हैं परिणामतः व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक जीवन में तनाव, झगड़े, सम्प्रदायवाद, शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि अपना मुख सुरसा की तरह फैला रहे हैं। आये दिन असामाजिक घटनाएं घट रही है। पारिवारिक रिश्ते विश्रृंखलित होते जा रहे हैं। असामाजिक, अमानवनीय घटनाओं से मानवता खुले आम शर्मसार हो रही है।

यहां यह कहना लाजमी होगा कि या तो हम साहित्य से दूर होते जा रहे हैं या इसमें अन्तर्निहित जीवन-मूल्यों को समझ नहीं पा रहे हैं, जीवन की अंधी दौड़ में हम केवल सरपट दौड़े चले जा रहे हैं । जो मानव को दिशाहीन जीवन शैली एवं व्यवस्था की ओर ले जा रही है जो कि एक बड़ी चुनौती है । एक बार पुनः हमें मूल्यों से अभिरंजित साहित्य के पन्ने पलटाने की आवश्यकता है । तभी हम अपनी सभ्यता, संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफल हो पायेंगें । भारतीय साहित्य सदैव एक सजग प्रहरी के रूप में इसकी पैरवी करता है और करता रहेगा ।

सन्दर्भ

1. https ÷÷ gooclëimageëcnxe9r
2. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रस गोरखपुर पृ. स. 608
3. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रस गोरखपुर पृ. स. 930
4. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ. स. 30
5. डॉ अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ. स. 27
6. डॉ अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ. स. 31
7. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रस गोरखपुर पृ. स. 687

मध्ययुगीन संत साहित्य की प्रासंगिकता-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. सपना तिवारी

वर्तमान समय को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विकास की सदी कहा जा सकता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य का जीवन इतना अधिक व्यस्त हो गया है कि उसे अपने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक कर्तव्यों के बारे में सोचने, समझने एवं जानने की फुर्सत तक नहीं है। वह स्वार्थी सुविधाभोगी एवं अंतर्मुखी हो गया है। उसे किसी त्याग एवं बलिदान से कोई वास्ता नहीं रह गया है। वह केवल अपनी ज़िंदगी को किसी भी कीमत पर खुशहाल बनाना चाहता है। चाहे उसे इसके लिए कितने अपराध क्यों न करने पड़े। वह इस बात से अनभिज्ञ रहता है, यही कारण है कि आज उसे उदासी भरी ज़िंदगी नसीब हो रही है। हिंदी साहित्य के प्रत्येक युग में कृतिकारों और बुद्धिजीवियों को वर्तमान संस्कृति व मूल्यहीन जीवन की चिंता रही है और यह चिंता हिंदी साहित्य के प्रत्येक काल में प्रश्नचिह्न की तरह हमारे समक्ष प्रस्तुत हुई है। साहित्य समाज को मात्र दर्पण ही नहीं दिखाता, बल्कि समस्याओं की तह में जाकर संवेदनात्मक धरातल पर हमें स्थितियों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ समय-समय पर दिशा खोते हुए समाज को मार्गदर्शन देता है। संत साहित्य ने तो यथार्थ रूप से अपनी संस्कृति, परंपराओं, मूल्यों, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक आदर्शों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि ऐसा नहीं होता तो आज वाल्मीकि, व्यास, सूर, तुलसी, कबीर आदि को न तो कोई पढ़ता और न ही इन्हें पाठकों द्वारा महिमा मंडित किया जाता। वास्तव में उत्कृष्ट रचना व रचनाकार वही होता है जिसकी स्थिति प्रत्येक युग में प्रासंगिक बनी रहे। संत साहित्य अपने युग से कहीं बहुत आगे थे। बुद्धिजीवी संतों ने अपने साहित्य में उस प्राचीन समय को ही नहीं वरन् भविष्य की प्रासंगिकता को स्थान दिया है।

संत साहित्य की विशेषताओं को उद्घाटित करते हुए डॉ. शिवकुमार शर्मा ने

छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास

छत्तीसगढ़ी भाषा को प्राचीनकाल में 'कोसली' ...
दो-ढाई सौ वर्षों से दक्षिण कोसल ...
लोकभाषा 'कोसली' को 'छत्तीसगढ़ी' ...
अनुगामिनी है. डॉ. महेशचन्द्र शर्मा ने ...
छत्तीसगढ़ में प्राप्त हुए शिलालेखों ...
'जन्मदाता प्राचीन भाषा-रूप' ...
हैं. उसके पहले ईसा-पूर्व चतुर्थ ...
दिशा में तथा शौरसेनी प्राकृत ...
जिनसे यह प्रमाणित होता है ...
मिश्रण से एक भिन्न प्राकृत ...
की तुलना में मागधी के लक्षणों ...
शब्द से अभिहित किया गया. ...
आज भी क्षेत्रीय भाषाओं- ...
उत्तर-पश्चिम में शौरसेनी- ...
छत्तीसगढ़ में भी उत्तर भारत ...
की तीसरी शताब्दी से लेकर ...
प्रमाणस्वरूप यहाँ उस अवधि ...
की दो शताब्दियों के शिलालेखों ...

Pro.R.K.Lahare

Pro.T.S.Painkra

BOOK HINDI

छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास

छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास

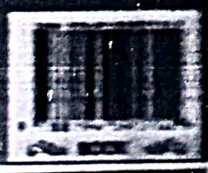

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

संपादक
प्रो. आर. के. लहरे
सह-संपादक
प्रो. टी. एस. पैंकरा

Publishing-In-support-of,

GEEL INFIX
PUBLISHING SERVICES

Kotra Road, Rajeev Nagar, Opposite Rambagh
Raigarh, Chhattisgarh - 496001

www.geelinfix.in

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 9788194591702

Price: ₹ 250.00

The opinions/contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/standings/ thoughts of Geel Infix Publishing Services.

Printed in India

Chhattisgarhi Bhasha & Sahitya Me Yugin Chetna Ka Vikas

इलेक्ट्रोनिक संपादक
संगीता पाटीदार

GEEL Infix

GEEL INFIX PUBLISHING SERVICES
www.geelinfix.in

विषय–सूची

क्र.		पृ. क्र.
1.	'छत्तीसगढ़ी कहानियों में अभिव्यक्त लोक चेतना' –डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल'	11
2.	छत्तीसगढ़ी में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य वनाटयकला –डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन	18
3.	छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में लोकगीत – जानकी चौधरी	22
4.	छत्तीसगढ़िया करमा – डॉ. श्रीमती रश्मि कोका	
5.	छत्तीसगढ़ी के विविध बोलियाँ –श्रीमती इमिलियाना लकडा	32
6.	छत्तीसगढ़ लोक नाट्य परम्परा –डॉ. महेश कुमार शुक्ल –अतुल कुमार मिश्र –विपिन कुमार तिर्की	35
7.	छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और लोक जीवन प्रो.चरणदास बर्मन	36
8.	लाला जगदलपुरी की छत्तीसगढ़ी कविताओं में जीवन सौन्दर्य – डॉ. राजेश कुमार सेठिया	48
9.	लोक साहित्य : महत्व और बाजारीकरण –डॉ. एच. आर आगर * –लक्षेष्वरी **	50
10.	छत्तीसगढ में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य व नाट्य–कला – श्रीमती माग्रेट कुजूर	51
11.	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति वर्तमान परिवेश –प्रो. बी के भगत	59

12.	छत्तीसगढ़ी बोली व साहित्य के विविध आयाम –डॉ. मंजुला पाण्डेय	65
13.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोकगीत संगीत, नृत्य व नाट्यकला – संगीता रंगारी	69
14.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गीत, संगीत, नृत्य व नाट्य कला –राजेन्द्र प्रसाद नागवंशी	74
15.	छत्तीसगढ़ की राम मय भूमि –डॉ. सरिता पाण्डेय	76
16.	छत्तीसगढ़ के विविध बोलियाँ डॉ. बी.आर. महिपालस डॉ. सुनीता राठौर सहा.	79
17.	छ.ग. साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति श्रीमति पुष्पांजली दासे	82
18.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –डॉ. सुनीता राठौर	90
19.	छत्तीसगढ़ की लोक नाट्य परंपरा *डॉ. महेश कुमार शुक्ल, **अतुल कुमार मिश्र, *** विपिन तिर्की	93
20.	छत्तीसगढ़ी साहित्य में अभिव्यक्त लोकसंस्कृति डॉ. पी.डी. महंत* बेला महंत**	94
21.	छत्तीसगढ़ी लोकगीतः एक परिचय –राकेश कुमार कौशल	96
22.	छ.ग. में प्रचलित त्यौहार व मेला का स्वरूप –डॉ0 रमेश टण्डन	102
23.	छत्तीसगढ़ी और आंग्ल भाषा का तुलनात्मक अनुशीलन प्रो. राज कुमार लहरे* प्रो. हेमकुमारी पटेल**	107
24.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –धर्मेन्द्र कुमार पाटनवार	113

25.	छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास – श्रीमती अंजू महिलांगें	122
26.	छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति में जादू–टोना, टोटका एवं बैगा –मनीष कुमार कुर्रे शोधनिर्देशक– डॉ. चन्द्रकुमार जैन	129
27.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गउरा गीत –डॉ0 (श्रीमती) बी0 एन0 जागृत	137
28.	लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति –प्रो. एस कुमार गौर	145
29.	आदिवासी साहित्य में निहित कविता के विविध आयाम – प्रो. लवन सिंह कंवर, श्रीमती लता कंवर	152
30.	पं.सुंदरलाल शर्मा और केयूर भूषण के साहित्य में संवाद योजना – नम्रता पांडेय	167

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

'छत्तीसगढ़ी कहानियों में अभिव्यक्त लोक चेतना'

डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल'

छत्तीसगढ राज्य 01 नवम्बर, सन 2000 को नए प्रदेश के रूप में उदित यह नया राज्य है, जो म.प्र. का दक्षिण–पूर्वी भाग था। आदिम मानवकों के पुरावशेषों से प्रसिद्ध यह प्रदेश रामायण, महाभारत से लेकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना के डेढ़ दशक आगे बढ़कर विविध कालक्रमों का दस्तावेज ही प्रस्तुत नहीं करता, अपितु इतिहास और संस्कृति की महान और गौरवशाली पृष्ठभूमि को भी पोषित करता है। छ.ग. राज्य धान की खेती व विशिष्ट प्रजाति व उपज के कारण धान का कटोरा कहलाता है। यहाँ एक तिहाई वन्य क्षेत्र हैं जो यहाँ की सम्पन्नता और पर्यावरण की दृष्टि से प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने का संयोजन करते हैं। यहाँ की पावन धरा में बहुमूल्य खनिजों का भण्डार है तथा बिजली पानी का संकट अन्य राज्यों की तुलना में नगण्य है। इस्पात और सीमेन्ट उद्योग के रूप में भी यह राज्य प्रख्यात है, इस तरह धन–धान्य से परिपूर्ण विपुल खनिज संपदाओं से आपूरित है, फिर भी इस अमीर धरती में गरीब लोग रहते हैं। लेकिन विगत 18–19 सालों में छ.ग. आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, पलायन कम हुआ।

छ.ग. की दो करोड़ जनता छत्तीसगढ़ी समझती है और मातृभाषा के रूप में इसे अधिमान्य भी करती है। छ.ग. भाषा और साहित्य के निकष पर उत्कर्ष को स्पर्श कर रही है। यह भाषा भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से समृद्धि के शिखर पर प्रोन्नत परिपुष्ट होती हुई विभिन्न भाषाओं के शब्दों के समन्वय कर विकासमान है। डॉ. विनय कुमार पाठक के शब्दों में कहें तो छत्तीसगढ़ अन्य भाषाओं के शब्दों को भात खिलाकर, चूड़ी पहनाकर अपनी जाति में मिला लेती है। कहने का भाव यह है कि छत्तीसगढ़ी संस्कृति और प्रकृति के सांचे में ढलकर अन्य भाषा बोलियों के शब्द समादृत होते हैं।

छत्तीसगढ़ की अपनी वैविध्यपूर्ण संस्कृति है। यहाँ के लोक जीवन व लोक संस्कृति में जीवन के उदात्त मर्म समाहित है। यहाँ की आत्मगत चेतना गीत व कहानी बनकर जीवन को उल्लास से भर देती है। प्रकृति के साथ घुलमिल कर उल्लास और चेतना के साथ प्रबल राष्ट्रीयता का स्वर भी छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों ने मुखर किया है। सन 1857 के महाविद्रोह की अनुगूँज भी सन 1833 से शुरु हो गई थी। रायगढ नरेश जुझारसिंह के पुत्र देवनाथसिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया था। इस विद्रोह से छ.ग. के

7. सं0 जमुना प्रसाद कसार – झाँपी, सिकोलाभाठा, दुर्ग, अंक–01,जनवरी–जून, 2001,पृष्ठ – 185।
8. .....वही.....
पृष्ठ – 67।

डॉ0 (श्रीमती) बी0 एन0 जागृत सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शास0 दिग्विजय स्वशासी महा0 राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

प्रो. एस कुमार गौर

विषय प्रवेश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अरस्तु के द्वारा मनुष्य को सामाजिक रूप से परिभाषित करना उनकी विशिष्ट दार्शनिक दृष्टि का द्योतक है। प्राचीन अनादि काल से मानव का प्रकृति के साथ संबंध रहा है। समय के साथ मानव सभ्यता का विकास हुआ। परिणाम स्वरूप विभिन्न संस्कृतियों में मानव मन लोकरंजित होता गया।

लोक की अवधारणा से मूल संवेदनाएँ हैं, बिना लाग–लपेट के अपनी बात को स्पष्ट करने की क्षमता है। क्योंकि लोकजीवन सदानीरा प्रवाहित होने वाली नदियों के सामान निर्मल होती है। अपनेपन की मिठास लिए लोक की बात अंतर्मन को गदुगुदाती है और बुदबुदाती भी है। लोक मन के एहसास में मानव मन की सच्ची अनुभूति है। संवेदना में वह शक्ति है जिससे मानवीय संबंध पारस्परिक रूप से मजबूत होते है। अतः हम कह सकते हैं कि लोक में मानव मन की महक होती है, जिसमें सारे मानव जीवन का सार होता है। लोक साहित्य लोक जीवन का मूल दस्तावेज है, जो लोक जीवन की संपूर्ण झाँकी की लिखित रूप में प्रस्तुत करती है। बिना लोक साहित्य के लोकजीवन को पढ़ पाना असंभव है। अतः आज के परिवेश में यह विषय आवश्यक एवं प्रासंगिक है। लोक संस्कृति के संरक्षण में हमारी भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए।

छत्तीसगढ़ की पृष्ठभूमि :– भारत गाँवों का देश है, भारत की आत्मा गाँवों में बसी है। गाँव की पहचान उसकी अपनी संस्कृति से है। भारत के मानचित्र पर 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ 26वें

राज्य के रूप में स्थापित हुआ। अपनी जनजाति सांस्कृतिक विविधता के कारण ही छत्तीसगढ़ को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है। वास्तव में यहाँ की जनजातीय संस्कृति की अपनी अलग विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है। वास्तव में यहाँ की जनजातीय संस्कृति की अपनी अलग विशेष पहचान है। आज मानव इसलिए मानव है, कि उसके पास उसकी संस्कृति है। मानव और पशु में मुख्य अंतर संस्कृति का ही है। संस्कृति के आधार पर ही हम एक व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक समाज को दूसरे समाज से अलग करते है। संस्कृति के अभाव में मानव पशु से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता। संस्कृति ही मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है।

साहित्य समाज का दर्पण है तथा साहित्य के माध्यम से ही हम अपने इतिहास को जान सकते है। ऐसे में लोक जीवन की झांकी का प्रस्तुतीकरण लोक साहित्य के माध्यम से ही किया जा सकता है। इस दृष्टि से लोक साहित्य, लोक जीवन का दर्पण है। लोक साहित्य में लोकजीवन की परंपरा, रीति–रिवाज, वेशभूषा, तीज त्यौहार, मान्यताएँ समाहित होती है। इस तरह से लोक साहित्य के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता।

छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ एवं संस्कृति :– छत्तीसगढ़ी में विभिन्न प्रकार की जनजातियाँ पायी जाती है। जिसमें दण्डकारण्य क्षेत्र में प्रमुख रूप से गोड़, माडिया, मुरिया, परजा आदि है। इसी प्रकार बैगा, बिंझवार, कंवर, लरिया जनजातियाँ कवर्धा, गरियाबंद, महासमुन्द क्षेत्रों में पाई जाती है।

बिंझवार, कोरवाँ आदि जनजातियाँ उत्तरी छत्तीसगढ़ के सरगुजा, कोरिया, जशपुर, अंबिकापुर एवं रायगढ़ क्षेत्रों में पाई जाती है।

इन जनजातियों की अपनी अलग–अलग संस्कृति, मान्यताएँ, परंपराएँ है । जो उन्हे पारस्परिक, समाजिक, सांस्कृतिक रूप से जोड़े रखती है।

छतीसगढ़ के लोक साहित्य में लोकगीत :– लोकगीत, लोकजीवन का हृदय स्थल है। जनजातीय समाजिक जीवन की झांकी, लोकगीतों एवं लोक नृत्यों में आवश्यक देखी एवं समझी जा सकी हैं जिसमें जीवन के अतरंग छिपे होते हैं कुछ प्रमुख लोकगीतों का वर्णन किया जा रहा है, जो इस प्रकार है –

1. विवाह गीत – विवाह संस्कार के समय महिलाओं द्वारा यह गीत गाया जाता है, एवं वैवाहिक जीवन की मंगल कामना वर–वधु को दी जाती है । जो इस प्रकार है –

एक तेल चढगे.... ओ.....दाई एक तेल चढ़गे...
मडवा म दुलरू, तोर माथे के मउर....
आशीर्वाद समारोह के समय –
एही धरम ले धरम हे गा... आओं मोर दाई...
चुटुर–चुटुर चुमा लइबे ओ..... आओ मोर दाई चना खाये बर पइसा देवे ओ....

2. गौरा–गौरी गीत – यह गीत दीपावली के समय लक्ष्मी पूजा के दिन महादेव और पार्वती अर्थात् गौरा–गौरी का प्रतीकात्मक विवाह, बारात, आयोजन के समय महिलाओं द्वारा गाया जाता है। जिसमें अपने इष्टदेव बड़ादेव की स्तुति कर सुख समृद्धि की कामना की जाती है। उदाहरण निम्नवत हैं –

गवरा जागे, मोर गवरी जागे... जागे हो शहर के लोग...
बइगा जागे मोर बइगीन जागे अउ जागे हो शहर के लोग...
बाजा बाजे मोर बजनीया जागे हो शहर के लोग...

एक पतरी रहिनी बहिनी हो... भाय रतन हो दुर्गा बहिनी....

3. सुवा गीत – यह गीत दशहरा के समय कार्तिक मास में प्रायः महिलाओं के द्वारा गाया जाता है। जिसमें तोता अर्थात् 'सुवा' को बीच में रखकर उसके चारों ओर गोल घेरा बनाकर नृत्य करती है।

तरी हरी नहा नरी... ना ना मोर सुवा ना...
तरी हरी नहा नरी... ना ना मोर सुवा ना...
कोन वन म रहिथे मोर पड़की परेवा राम, कोन वन मा रहे भेंगराज...
हो सुवा हो कोन वन म रहे भेंगराज...
तरी हरी नहा नरी... ना ना मोर सुवा ना...

4. करमा/ददरिया – इसमें पुरूष एवं महिलायें दल बनाकर नृत्य करते हुए गीत गाते हैं तथा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से प्रेम का उद्घाटन करते हैं। यह श्रृंगारिक गीत होता है। जिसमें नायक नायिका के संयोग वियोग पक्ष का वर्णन होता है।

तोर मन कइसे लागे राजा, महल भीतरी मो तोर मन कइसे लागे...
पानी रे आये पवन संग म... मोला अन्न पानी नई सुहावय तोरेच्च सुध म...
तोर न कइसे लागे राजा, महल भीतरी मा तोर मन कइसे लागे.....

5. पंडवानी – पंडवानी ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, कथाओं को लोकभाषा के रूप में जन मानस तक सहज रूप में पहुँचाने का माध्यम है। इसमें एक प्रमुख गायक या गायिका होते हैं। हुँकार

देने के लिए एक 'रागी' होता है। गीत–संगीत के माध्यम से इसकी प्रस्तुती दी जाती है।

प्रायः इसमें महाभारत के कथा प्रसंगों की मार्मिक व्याख्या गायक/गायिका द्वारा वेदमती या कापालिक शैली में किया जाता है।

वही समय के ये बेरा म गा.... ये मोर भाई....
ये पांचो पाण्डव ह विचारे गा.... ये मोर भाई....
येदे किशन कन्हैया समझावन लागे ग... ये मोर भाई....

6. सेवागीत – सोहर गीत बच्चे के जन्म संस्कार के समय महिलओं द्वारा गाया जाता है। जिसमें महिलाएँ नवजात के प्रति मंगल जीवन की कामनाएँ करती है।

इसी प्रकार भोजली गीत, जवांरा गीत, फाग गीत इत्यादि गाया जाता है।

निष्कर्ष :–

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि लोकगीतों में ही जनजातीय समुदाय का लोक जीवन छिपा हुआ है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी। लोकगीत लोक साहित्य की आत्मा है। इस दृष्टि से लोक साहित्य की रचना अधिक से अधिक संख्या में होना चाहिए, ताकि जनजातीय संस्कृति का दिग्दर्शन हो सके। आधुनिक संदर्भ में विकास की अंधी दौड़ ने सांस्कृतिक जनजातीय जीवन को भी प्रभावित किया है। यही कारण है कि लोक साहित्य एक दायरे में सीमित रह गया है। इसे पल्लवित, पुष्पित एवं संरक्षित रखना या करना आवश्यक है। ताकि संस्कृति की यह धरोहर आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करे।

आधुनिक काल की चाह ने लोकजीवन को काफी प्रभावित किया है। विकास बनाम विनाश के पर्याय को जन्म दिया है। लोक जीवन, परंपराओं, संस्कृतियों के समक्ष विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ भी है। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, अशिक्षा, गरीबी, नक्सलवाद ने लोक साहित्य की समृद्ध परंपरा को प्रभावित किया है। यही कारण है कि यह लोक परंपराएँ, संस्कृति समय के सापेक्ष विलुप्त होती जा रही है। जो कि किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति के लिए चिंतन का विषय है। लोक साहित्य के संवर्धन एवं संरक्षण से ही शिष्ट साहित्य समृद्ध होता है। अतः हम सबको इस दिशा में विशेष प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ :–

(1) डॉ0 दयाशंकर शुक्ल, छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़।

(2) डॉ0 बी0 एल0 साहू, छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य, भावना प्रकाशन,नई दिल्ली।

(3) डॉ0 एन0 के0 लहरे, शास0 लाल चक्रधर शाह महा0 अं0 चौकी में आयोजित शोध संगोष्ठी, दिसम्बर 3 एवं 4 सन् 2012 में प्रकाशित लेख।

(4) जमुना प्रसाद कसार, छत्तीसगढ़ी गीत, लोक कंठ का कलकल निनाद, श्री प्रकाशन, आदर्श नगर दुर्ग, छत्तीसगढ़।

(5) डॉ0 अनुसूइया अग्रवाल, छत्तीसगढ़ लोक साहित्य : अर्थ और व्याप्ति, शताब्दी प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़।

सहायक प्राध्यापक, (हिन्दी) शास0 रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय, छुरिया
शोध निर्देशक – डॉ0 श्रीमति बी0 एन0 जागृत

हिन्दी विभाग, शास0 दिग्विजय स्वशासी महा0 राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)
मो0 नं0 – 9407691137, 8462925940
ई–मेल – sgaur3498@gmail.com

MAHAMUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विधावर्ता®

Issue-35, Vol-03 July to Sept-2020
Peer Reviewed International Referred Research Journal

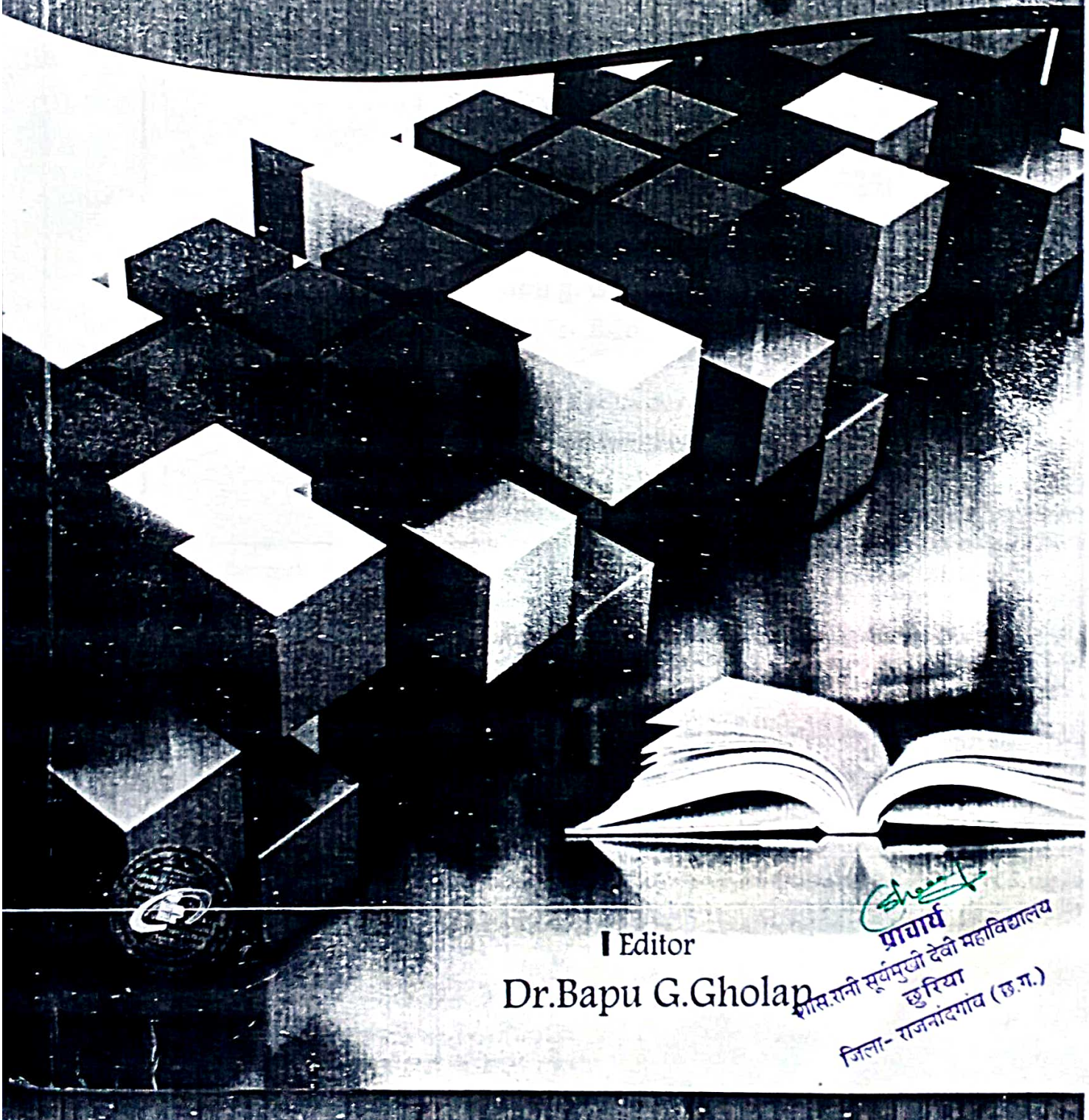

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

प्राचार्य
रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

July To Sept. 2020
Issue-35, Vol-03

Date of Publication
01 August 2020

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
*Ph.no: 0*9811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
pbpadwal@gmail.com

• **Dr. Nilendra Lokhande**
Head-Department of Commerce,
S.N.D.T. College of Arts & S.C.B.College of Comm. & Sci., S. N. D. T. Women's University,
Mumbai-20. Mobile: 98 21 230 230
Email: lokhandend@gmail.com

• **Dr. Bhairulal Yadav**
Assistant Professor,
Department of Geography
Visva-Bharati University,Santiniketan,
West Bengal 731 235,Mob. +91 8670027217
blal.yadav@gmail.com

• **Dr. Madan Mohan Joshi**
Asst.Professor of History, School of Social Sciences
Uttarakhand Open University, Haldwani (Uk)
Cell nos. 09690676632,09412924858
mmjoshi@uou.ac.in

• **Dr.Seema Sharma (Tiwari)**
Assistant Professor-Political Science,
Govt. M.L.B. Girls P.G. College, KilaBhavan, Indore-66
Mob: 9425904160
seemasharmam4@gmail.com

• **Dr. N.D. Choudhari**
Dept. of Marathi
Anandrao Dhonde Alias Babaji College,
Kada, Tal-Ashti, Dist- Beed (India) Mobi. 7350474989
ndbchoudhari@gmail.com

• **Dr. Yallawad Rajkumar**
Lt. Laxmibai Deshmukh Mahila College,
Parli v. Dist. Beed,Pin. 431515,
Mobi. 9881294195

• **Dr. Awasthi Sudarshan**
Navgan college, Parli Vaijnath
Dist. Beed Pin.431515, Mobi.9960127866
sudarshanawasthi@gmail.com

• **Dr. Ravindranath Kewat**
Teacher Colony, Bamni- Bllarpur, TQ. Ballarpur
Dist. Chandrapur Pin 442701, Mobi- 9421715172
kwmmballarpur@rediffmail.com

• **DR.PIYUSH PANDDEY**
371 H POCKET II, MAYUR VIHAR PHASE I
NEW DELHI 110091,Mobi:9871415353
opiyushpandey@gmail.com

• **Dr. Vishal purohit**
111, dwarkadhish colony near airport road,
Indore (MP)
Pin 452005 Mobile- 9303225368
Email- vishal21234@gmail.com

• **Dr. M.SURESH BABU,**
Librarian,
C.M.R. College of Engineering & Technology (Autonomous). Kandlakoya, Medchal Road,
Hyderabad - 501 401
Mobile : 9492759646
drsureshsvu@gmail.com

• **Dr. DEEPAK NEMA**
S/O Dr. B.D. Nema, Near Prem Nagar Power H
Satna-485001,Contact No.8989469156,
Email: dnema14@gmail.com

• **Dr. Neeraj Kumar Shukla**
HEAD, Department of B.Ed. Government
Post Graduate College Kashipur, Udham
Singh Nagar, Uttarakhand, India 244713
9450223977
nshuklan@gmail.com

• **Sunil S Trivedi**
Rameshwar Park,B/h Navarang Society,
Mogri-388345 Ta & Di: Anand
Mob: 9727290344, 8866465904
trivediss@ymail.com

• **Dr. Anil Kumar Singh**
H.O.D. Library & Information Science
Nandini Nagar P.G. College
Nawabganj, Gonda
Email-singh.anil224001@gmail.com
Mob-09793054919

• **Dr. Preeti Sarda,**
Flat No.505Amrapali Arcade, Street
No.10, Himayat Nagar, Hyderabad.-500029,
Telangana . Mob.08374378080
pritibhala@gmail.com

• **Ramakant Ambadas Choudhari**
Plot No. 43 B / Vidyavihar Colony Part -01,
SHIRPUR , DIST- DHULE (MH) 425405
Mobi – 7588736283
rac2722@gmail.com

• **Dr. Dinesh Kumar Charan**
Associate Professor and HOD-History Dept.,
Govt.Lohia College Churu (Rajasthan) India
Pin- 331001
Mob. No.-9414305804

Indexed

INDEX

01) "A Study of a Personality Characteristic of factor E- Humble Vs Assertive ...
Dr. RANJAN K. BADWANAY, Aurangabad, Maharashtra, India ||14

02) Women Liberty – Values and Reality
Dr. Suresh R. Bathe, Buldhana ||17

03) Role of Ayurveda in prevention to COVID-19
Dr. Vibha Dubey & Dr. Manish Kumar Dubey, Kanpur ||19

04) Empowerment of women through SHGS in Daryapur
Jyoti Haware ||24

05) Analyzing the literary works of Sahityarathi Laxminath Bezbaruah
Jonmoni Das, Anjan Jyoti Sarma & Pallav Protim Mahanta ||26

06) Information Technology (IT) Industry in India: Progress and Potential
Dr. Kumar Kartikeya, Bhilwara (Raj.) ||29

07) Aatma Nirbhar Bharat-A way to make Self-Reliant India
Vikash Mandal & Kusum Kanan Mishra, Maharo ||34

08) Literature and Film: A study of Adaptation
A. U. Mundhe, Udgir ||36

09) Comparative Study of HDFC Bank and SBI
Mr. Anilkumar Nirmal & Dr. Purvi Derashri, Vadodara, Gujarat ||38

10) Open Educational Resources - OER in the Field of Business Management ...
Dr. N. K. Pachauri, Firozabad ||45

11) Ultrasonic Velocities of Binary Liquid Mixtures using Scaled Particle ...
Dr. K. N. Pande, Dt. Akola ||55

12) ICT: It'sApplication in the Teaching and Learning of Physical Education ...
Prof. Pritesh Patel, Anand ||58

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

13) Indian Banking Sector in Extant Scenario: A Trend Analysis
Dr. Manohar Das Somani & Kaushal Kumar, Indore ||62

14) Consumer behaviour towards skin care products with special reference to...
Dr. SAMIR KUMAR TIWARI & SONAL KHANNA, LUCKNOW ||67

15) A STUDY ON "WORKERS PARTICAPITATION IN MANAGEMENT DECISIONS"SRI ...
SUSHMA K.V. & VISHWANATH R. HAVALAPPAGOL, Chickballapur Tq & Dist ||72

16) Comparative study of physical fitness between two International games ...
Dr. Suresh Jayram Farakte, Kolhapur ||77

17) A Realistic View of the Presence of the Ghost in Hamlet
Dr. Alhaj Ali Adam Ismail & Asst. Lecturer. Yousif Khorsheed Saeed ||79

18) आजच्या काळात महात्मा गांधीच्या विचारांची प्रासंगिकता
डॉ. संजय गायकवाड, जि. हिंगोली ||83

19) कोरोना संसर्ग नंतर भविष्यातील भारतीय अर्थव्यवस्था (कृषीक्षेत्र)
प्रा.डॉ. गोवर्धन खेडकर, जालना ||85

20) कोविड–१९ चा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम
डॉ. गणेश बापुराव गावंडे, जि.जालना ||88

21) महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे आर्थिक विचार
प्रा. कल्याण सर्जेराव घोडके, जि. बीड ||92

22) मराठवाड्यातील महिला सहकारी बँकांच्या आर्थिक स्थितीचा चिकित्सक अभ्यास (विशेष संदर्भ : नांदेड ...
प्रा. कांबळे नागनाथ विठ्ठलराव, नांदेड ||94

23) शिवाजी महाराजांचा काळाच्या पुढे पाहणारा आर्थिक विचार
प्रा. प्रकाश जंगले, ठाणे ||97

24) अण्णाभाऊ साठे के साहित्यों में सर्वहारा वर्ग
प्रा. प्रमोद एस. मेश्राम, पाचल ||99

25) श्री एम०एन०राय और मार्क्सवाद:एक समीक्षा
डॉ. तिलकराज अण्डोला, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड ||102

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

26) लोकगीतों में नारी विमर्श : मारवाड़ के विशेष संदर्भ में
जया दूबे, जयपुर ||110

27) भारतीय साहित्य में अन्तर्निहित जीवन मूल्य
एस. कुमार गौर, राजनांदगाँव (छ.ग.) ||117

28) भारतीय मध्य वर्ग का विकास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (Growth of the ...
डॉ. महेन्द्र कुमार खारड़िया, चूरू ||119

29) आधुनिक राजस्थान में मीणा जनजाति में सामाजिक जागृति एवं सुधार
नीतेश मीणा, जयपुर ||125

30) भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोरोना महामारी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव
प्रा. डॉ. ए. बी. पटले, नागपूर ||136

31) जनहितार्थ कार्यों के लिए हितैषी – शाहू छत्रपति
अमिता वानखेड़े, इन्दौर ||139

32) वैश्विक आतंक का पर्याय कोरोना : भारत में इसका प्रभाव
डॉ. एस.एन. घोष & डॉ. शोभा श्रीवास्तव, जिला – दुर्ग(छ.ग.) ||142

33) राष्ट्र निर्माता, एकता एवं अखण्डता के प्रतीक सरदार वल्लभ भाई पटेल
मनीष कुमार कुर्रे, राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़) ||148

34) हल्द्वानी नगर व विकासखण्ड क्षेत्र के शिक्षा व्यवस्था के विकास का इतिहास
मुकेश चन्द्र & डॉ० रश्मि पंत, हल्द्वानी (नैनीताल) ||155

35) अकबर कालीन बागखम्बा मज़ार (सण्डीला, हरदोई) : एक ऐतिहासिक एवं ...
डॉ० श्याम प्रकाश, छपरा ||158

36) जीवन बीमा सेवा क्षेत्र में सार्वजनिक एवं निजी भागीदारी
डॉ. महेश शर्मा, मोनिका सिंघल & डॉ. डी. के सिंघल, उज्जैन ||162

37) शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में अध्ययनरत छात्रों की सृजनात्मकता पर पड़ने वाले ...
Sarita Soni, Shikohabad (Firozabad) ||166

38) खण्डवा जिले के वनग्रामों में सर्वेक्षण द्वारा पारिवारिक आय–व्यय ऋण प्राप्तियाँ ...
डॉ. डी. के. सिंघल & बद्री यादव, उज्जैन (म.प्र.) ||170

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

39) प्रवासी हिन्दी कविता में भारतीयता का परिदृश्य
डॉ. प्रिया ए., कोट्टयम ||175

40) राजी सेठ की कहानियों में नारी समस्या
गोस्वामी हेतल एम., राजकोट ||178

41) जयशंकर प्रसाद : शाश्वत जीवन मूल्यों के आधार
डॉ. शोभना जैन, जिला बैतूल ||181

42) सल्तनतकालीन महिलाओं की वेशभूषा व अलंकरण
डॉ. दिव्या सिंह, हसनगंज, उन्नाव ||184

43) नवीन तकनीकी के माध्यम से अधिगम के प्रति राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ...
डॉ. मंजु शर्मा & प्रीति शर्मा, जयपुर ||188

44) किरातार्जुनीयमहाकाव्ये द्रौपद्या: अभिप्रेरणं राजधर्मविवेचनञ्च
DR. MENAKARANI SAHOO, Cuttack, Odisha, India ||191

45) 'गोतावळा' आणि 'बारोमास' या कादंबऱ्यातील आशयसूत्र
डॉ. नाना झगडे, जि. पुणे ||196

http://www.printingarea.blogspot.com | www.vidyawarta.com/03

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

July To Sept. 2020
Issue-35, Vol-03

27

भारतीय साहित्य में अन्तर्निहित जीवन मूल्य

एस. कुमार गौर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया,
राजनांदगाँव (छ.ग.)

****

प्रस्तावना :– "भारतीय साहित्य की परिधि जितनी व्यापक है, उतनी ही गहन भी। समग्र भारतीयता का वोध भारतीय साहित्य में होता है। कहना गलत न होगा कि भारतीयता की संकल्पना का साकार रूप ही भारतीय साहित्य है। भारतवर्ष की नानाविध जातियों, समूहों, वर्गों, समाजों की भावभूमि भारतीय साहित्य में परिलक्षित होती है। देश की विभिन्न भाषाओं, बोलियों में रचित इस साहित्य में भारतीयता के प्राय: सभी स्वर समवेत रूप से सुनाई पड़ते हैं।"[१]

भारतीय साहित्य जीवन–मूल्यों की अमूल्य निधि है। जो मानव जीवन का आधार है। आज भारत विश्व में अपनी साहित्यिक समृद्धि एवं जीवन–मूल्यों के लिए जाना जाता है। अनादिकाल से वर्तमान तक भारतीय संस्कृति जीवन–मूल्यों से परिपूर्ण रही है। इसलिए भारत को विश्वगुरू का पद मिला है। न जाने कितने वर्षों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहे, कितने आक्रमण को हमने सहन किया, युद्ध देखे। कितनी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का पतन हुआ लेकिन हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं परम्पराएँ आज भी जीवित है, और आगे भी सदैव बनी रहेंगी। हमारी सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता हमारे जीवन–मूल्यों का बोध कराती है। **लार्ड मैकाले** ने कहा था कि – 'मैंने संपूर्ण भारत में विचरण किया लेकिन मुझे यहाँ न कोई भिखारी, न कोई लूटेरा और न कोई चोर मिला। यहाँ के लोगों में उच्च नैतिक मूल्य है। जब तक हम उनके इस नैतिक मूल्य को और उनकी पुरानी शिक्षा पद्धति को खत्म नहीं करेंगे। तब तक हम भारत पर ' Hk u ughadj l drA t Sk fd ge p lgr sgSA'[२] अंग्रेजों की धारणा थी कि भारतीय मूल्यों को नष्ट करके ही हम यहाँ शासन कर सकते हैं। ब्रिटिश संसद में ०२.०२.१८३५ को उनके द्वारा कहा गया यह कथन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महत्व को प्रमाणित करता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिस पर उसका वास्तविक रूप प्रतिबिंबित होता है। इस दृष्टि से भारतीय साहित्य सदा समृद्ध रहा है। समाज एवं संस्कृति के पारस्परिक समन्वय से साहित्य का निर्माण होता है। समाज एक ओर व्यक्तियों के विचारों को दर्शाता है, तो संस्कृति जीवन–मूल्यों को। चाहे वह जीवन–मूल्य व्यैक्तिक हो, पारिवारिक हो या सामाजिक, हम कह सकते है कि साहित्य जीवन–मूल्य की संवाहिका है।

साहित्यकार स्वयं एक युग की घटना होता है, वह अपने काल की घटनाओं, परंपराओं, इतिहास को अमिट करता है। उनकी रचनाएँ अपने समाज एवं संस्कृति को आगामी पीढ़ियों को दे जाती हैं। जब किसी साहित्यकार द्वारा लिखित व्यवहारिक बातें लोक में समाविष्ट हो जाती है, तब वह किसी सामाज की परंपराओं एवं संस्कृति के रूप में मान्य हो जाती है। सांस्कृतिक समृद्धि एवं सम्पन्नता के साथ जीवन–मूल्यों की दुशाला ओढ़े साहित्य सदैव समाज के लिए प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

भारतीय साहित्य में जीवन–मूल्य इस तरह घुला–मिला है, जहाँ से इनको निकाल पाना कल्पना से परे है। भारतीय साहित्य में जीवन–मूल्य भारतीय दर्शन का आधार है। इसी कड़ी में गोस्वामी तुलसी दास विरचित रामचरित मानस एक महाकाव्य, के रूप में एक युगबोध साहित्य के रूप जीवन–मूल्यों की विशिष्ट व्याख्या करती है। तुलसीदास ने अपनी इस रचना के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि लोक जीवन को नई दृष्टि दी है। श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम राम के रूप में स्थापित किया है। आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, प्रजापालक,

सखा, लोकरक्षक के रूप में उनके विराट व्यक्तित्व का चित्रण किया है। परिवार के मुखिया को किस प्रकार सभी के लिए समान दृष्टि एवं स्नेह रखना चाहिए, इसके महत्व को रेखांकित करते हुए वे लिखते है कि –

"मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहूं एक ।
पालइ पोसइ सकल अँग तुलसी सहित विवेक ।।"[3]

तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस के उत्तरकाण्ड मे रामराज्य की कल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया है। आदर्श समाज कैसा होना चाहिए तथा राजा–प्रजा के क्या–क्या कर्तव्य होने चाहिए ? वे इस प्रसंग में लिखते हैं –

"दैहिक–दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।।"[4]

राम राज्य में सभी लोग परस्पर प्रेम से रहते हैं, अपने–अपने धर्म का पालन करते हैं। वेद एवं लोकशास्त्र के अनुरूप आचरण करते हैं। अपने–अपने धर्म पालन करते हैं। वेद एवं लोकशास्त्र के अनुरूप आचरण करते हैं। उनके राज्य में कोई दरिद्र, विद्याहीन, रोगी, दम्भी नहीं हैं। सभी धर्म पालन में रत है। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि –

"नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ।
नहिं कोई अबुधन लच्छन हीना ।
सब निर्दभ धर्म रत पुनी ।
नर अरू नारि चतुर सब गुनी ।।"[5]

भरत जैसे आदर्श भाई के भातृत्व प्रेम को स्थापित करते हैं जिसको युवराज घोषित किये जाने के बावजूद भी वे राजसिंहसन छोड़कर अपने बड़े भाई श्रीराम की चरण पादुका को राजसिंहासन में स्थापित कर स्वयं वन को चले जाते हैं। आदर्श पत्नी के रूप में सीता के चरित्र का चित्रांकन किया है जो स्वयं राजवधू होते हुए भी १४ वर्ष के वनवास में महलों का सुख छोड़कर अपने पति के साथ वनगमन को सहज स्वीकार करती है एवं प्रत्येक चुनौतियों का सामना करते हुए एक आदर्श पत्नी एवं पतिव्रता नारी का धर्म निभाती है ।

तुलसी ने अपने काव्य मे सभी आवश्यक मानवीय गुणों दया, क्षमा, करूणा, परोपकार, प्रेम, सहिष्णुता आदि का वर्णन किया है। इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति से ही अच्छे समाज का निर्माण हो सकता है। तुलसी के राम इन्हीं गुणों से विभूषित है, इसलिए वे कहते हैं कि केवल राम ही उनके संकट मोचन हैं –

"एक भरोसो एक बल एक आस विस्वास ।
एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास ।"[6]

तुलसी के राम अवतारी हैं, जो संसार में धर्म की स्थापना एवं अधर्म के नाश हेतु मानव शरीर धारण किये हुए हैं – लोकरक्षक और लोकनायक के रूप में उनके चरित्र की स्थापना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि –

"जब–जब होइ धरम कै हानी ।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ।।
तब–तब प्रभु धरि मनुज सरीरा ।
हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा ।।"[7]

लक्ष्मण भी अपनी पत्नी उर्मिला एवं राजदरबार के सुख को छोड़कर अपने बड़े भाई की सेवा के लिए वनवास जाने का निश्चय करते हैं एवं उनके प्रत्येक कार्य में अपना सहयोग प्रदान करते हैं। एक सखा के रूप में हनुमान श्रीराम के प्रत्येक कार्यो को सफलतापूर्वक करते हैं। वानरों की सेना की सहायता से लंका विजय जहाँ एक ओर सामाजिक भावना का बोध कराती है, तो वहीं दूसरी ओर नकारात्मक शक्तियों का, विषम परिस्थितियों में किस प्रकार मिल जुलकर सामना करना चाहिए यह शिक्षा भी प्रदान करती हैं। सच्चे मित्र को किस तरह अपनी मित्रता निभानी चाहिए इसका प्रसंग प्रस्तुत करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं –

"जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ।
तिन्हहि बिलोकत भारी ।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना ।
मित्रक दुख रज मेरू समाना ।।"[8]

श्रीराम चरित मानस में विभीषण द्वारा अन्याय, असत्य का साथ छोड़कर सत्य एवं न्याय का पक्ष लेकर उनका विरोध करना दिखाया गया है। सीताहरण को गलत बताया जाना तथा इसके लिए स्वयं मंदोदरी

द्वारा अपने पति रावन का विरोध करना एवं सीता के प्रति संवेदना प्रकट करना नैतिक मूल्य का ही उदाहरण है।

आज के संदर्भ में हम पाते हैं कि वास्तविक जीवन से जीवन–मूल्य अपघटित हो रहे हैं। नैतिक सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा हैं, परिणामत: व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में तनाव, झगड़े, सम्प्रदायवाद, शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि अपना मुख सुरसा की तरह फैला रहे हैं। आये दिन असामाजिक घटनाएं घट रही है। पारिवारिक रिश्ते विश्रृंखलित होते जा रहे हैं। असामाजिक, अमानवीय घटनाओं से मानवता खुले आम शर्मसार हो रही है।

निष्कर्ष:– यहाँ यह कहना लाजमी होगा कि या तो हम साहित्य से दूर होते जा रहे हैं या इसमें अन्तर्निहित जीवन–मूल्यों को समझ नहीं पा रहे हैं। जीवन की अंधी दौड़ में हम केवल सरपट दौड़े जा रहे है। जो मानव को दिशाहीन एवं अव्यवस्थित जीवन शैली की ओर ले जा रही है, जो कि एक बड़ी चुनौती है। एक बार पुन: हमें मूल्यों से अभिरंजित साहित्य के पन्ने पलटाने की आवश्यकता है। तभी हम अपनी सभ्यता, संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफल हो पायेंगे। भारतीय साहित्य सदैव एक सजग प्रहरी के रूप में इसकी पैरवी करता है और करता रहेगा।

संदर्भ:–

१. डॉ. संतोष गिरहे, भारतीय साहित्य की चिंतन भूमि (संपादकीय)

२. https:eegoogleimageecnxe9r

३. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चारित मानस, कोड ८१ गीता प्रेसे गोरखपुर पृ.सं. ६०८

४. हनुमान प्रसाद पाद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड ८१ गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. ९३०

५. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। १४७ पृ.सं. ८०

६. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। १४७ पृ.सं. २७

७. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। १४७ पृ.सं ३१

८. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्री राम चरित मानस, कोड ८१ गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. ६८७

28

भारतीय मध्य वर्ग का विकास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Growth of the Indian Middle Class)

डॉ. महेन्द्र कुमार खारड़िया
सहायक आचार्य – एबीएसटी,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू

सारांश --

भारतीय जीवन का एक बुनियादी तथ्य है–गरीबी। वर्ष २००४–०५ में देश की ३७.२० प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रही थी। गरीबी मुनष्य के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाती है और उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुंचाती है। परन्तु पिछले वर्षो में भारतीय समाज में एक वर्ग में बहुत बड़ी संख्या में वरद्धि हुई है उसको भारतीय समाज में मध्यम वर्ग कहा जाता है। मध्यम वर्ग जिसकी गणना न अमीर वर्ग तथा न गरीबी रेखा से नीचे में होती है। इस वर्ग को मध्यम वर्ग कहा जाता है तथा सबसे ज्यादा भार इसी वर्ग पर होता है। इस शोध में भारतीय मध्य वर्ग का विकास क्रम का जो सफर है उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है तथा कोशिश की है कि मध्यम वर्ग के बारे में विस्तार से जानकारी व अध्ययन करके एक शोध कार्य सम्पादित करना, जिससे इस वर्ग के बारे में भी सरकार जन–कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया तथा भारतीय मध्य वर्ग को भी राहत मिले जिससे यह वर्ग भी और ज्यादा योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था तथा नव–निर्माण में दे सके तथा इसको भी ज्यादा महत्व सरकारी योजनाओं और नीतियों में मिले। विकास प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय मध्य वर्ग की तेजी से वृद्धि हुई है जो कि मुख्यत: शहरों और महानगरों तक सीमित है। इस दृष्टि से यह समावेशी विकास को

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

अंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2020
Issue36, Vol-01

Date of Publication
01 Oct. 2020

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना गति गेली, गतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
सूरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात स्वतंत्र झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2020
Issue-36, Vol-01

INDEX

01) EFFECT OF 4- HYDROXY-7METHOXY-3-PHENYLCOUMARIN ON BIOPRODUCTION ...
Dr. Arun Kumar & Anil Kumar, Madhepura, Bihar ||13

02) GLOBALIZATION AND INDIAN MASS MEDIA
Capt. Parasram Tukaram Bachewad, Aurangabad (Maharashtra) ||19

03) THE VITAL ROLE OF WOMWEN IN THE ESTABLISHMENT OF THE DEMOCRATIC VALUE
Dr. Suresh Rambhau Bathe, Buldana ||20

04) A Study of E- Retailing Challenges and Opportunities in Global Scenario
Dr. M. B. Biradar, Dist Jalna (M.S.) ||22

05) FORMULATION AND EVALUATION OF NAPROXEN EMULGEL FOR TOPICAL ...
Monali N. Chavanke & Dr. Vivek A. Kashid, Dist-Nashik, MS, India ||25

06) A COMPARATIVE STUDY ON E-BANKING SERVICES PROVIDED BY SELECTED ...
Mr. Rahulkumar M. Dhruv & Dr. Rajesh M. Patel ||30

07) The systematic study of Devbogh marketing strategy
Neha Dubey & Dr. Gyanendra Shukla, Raipur ||36

08) Anthropomorphism in ReligionWith Special Reference to the Emotion-Fear
Hitanshi Yajnik, Rajkot (Gujarat) ||37

09) An Overview: Working Women Issues in Urban India
Dr. Balaji S. Hokarne & Dr. Urmila K. Shirshi, Dist. Latur, Maharashtra ||40

10) India And China: A Thousand Years Of Cross -Cultural Interactions
Dr. Nasreen Begum, Prayagraj, U.P. ||44

11) E-COMMERCE AN OVERVIEW
M. P. Pagare, Dist Jalna (M.S.) ||52

12) Autobiographical elements in the novels of Ngugi WaThiong'o
Shailesh Narendraray Pandya & Dr. Nilesh Sathvara, Ahmedabad ||54

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

13) Growth And Regulatory Framework Governing The Cooperative Banks In India
Pramila Devi & Dr. Hari Om ||59

14) SPATIAL DISTRIBUTION OF URBAN POPULATION IN BIHAR: A GEOGRAPHICAL ...
DR. PRAVIN KUMAR PRABHAKAR, PATNA ||62

15) INNOVATIVE INNOVATION
Dr. Usha Rao, Mumbai ||65

16) Caring for Elderly in Developed and Developing Nations: A Comparative ...
Smita Roy, Lucknow ||67

17) ROLL OF EDUCATION IN WOMEN EMPROWEMNT
Dr. Gajanan S. Sharma, Khamgan, MS ||72

18) Narrative Techniques in Children's Fantasy series Harry Potter
Sukriti Sharma, Akhnoor, Jammu and Kashmir ||76

19) Impact Of Increase in Income By Way Of Rural Out- Migration Of Labour ...
Dr. VINOD KUMAR SINGH, Dist-VAISHALI ||81

20) AN OVERVIEW OF SOCIAL ACCOUNTING AND AUDIT IN INDIA
Dr. Sumit Prasad, Patna ||86

21) Concentration Of Fluorides In Ground Water Samples Of Selu City Dist. ...
Devidas U. Thombal, Dist. Jalna ||91

22) ASSESSMENT OF GROUND WATER QUALITY WITH RESPECT TO CORRELATION ...
Vikas D. Umare, Chandrapur (MS) INDIA ||93

23) सध्या परिस्थितीतले शिक्षण व शिक्षक आणि पालकांची भूमिका – एक ...
डॉ. शितल दिनकरराव अडगावकर, वर्धा ||97

24) मूल्यभिष्टीत शिक्षण – एक चिंतन
डॉ. एस. एन. बरडे, चंद्रपूर ||98

25) लातूर जिल्ह्यातील गणेश प्रतिमा
प्रा.डॉ. सोमवंशी एस. आर., जि. लातूर ||101

26) पाकिस्तान : अस्थिरतेतील सातत्य
डॉ. गणेश गिरी, नाशिक ||104

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2020
Issue-36, Vol-01

27) आधुनिक भारतीय भाषा विश्लेषण में पाणिनि व्याकरण की भूमिका
डॉ० कुमारी माला, पटना ||10

28) मृदुला गर्ग का उपन्यास 'अनित्य' : एक अनुशीलन
डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील, धारवाड ||11

29) प्रवासी साहित्यकार सुषमवेदी की कहानी 'कितने–कितने अतीत' में वृद्ध विमर्श
डा. पवन कुमार शर्मा, धारीवल ||11

30) अस्पृश्यतायाः निवारणे अम्बेदकरस्य योगदानम्
बृज मोहन कुमार, पटना ||11

31) नारी पात्रों में द्वंद्व एवं संकल्प की सशक्त हस्ताक्षर : कृष्णा सोबती
एस. कुमार गौर & डॉ० (श्रीमती) वी० एन० जागृत, राजनांगाँव, छ० ग० ||121

32) नाथपंथ का हठयोग
डा० प्रवीण कुमार गुप्त, गोरखपुर (उ०प्र०) ||126

33) मुक्तिबोध की कविताओं में मजदूर : कोरोना के संदर्भ में
डॉ. आशीष कुमार गुप्ता, जिला– बलरामपुर (छ०ग०) ||130

34) बच्चों के शैक्षिणिक विकास के लिए वातावरण निमार्ण में घरेलू लिनन की वर्तमान ...
डॉ० सुमन मिश्रा & प्रिया जायसवाल, वाराणसी ||133

35) भारतीय संस्कृति और प्रवासी साहित्य
डॉ. लवलीन कौर, लुधियाना ||137

36) समतामूलक समाजव्यवस्था की संवाहिका : समकालीन हिंदी दलित कविता
संतोष नागरे, जि. बीड ||143

37) 'असनी' (फतेहपुर) के कवि : आचार्य सेवक और उनका वाग्विलास
डॉ० उत्तम कुमार शुक्ल, फतेहपुर ||146

38) शैलेश मटियानी का जीवन संघर्ष और साहित्य सेवा
सुबिया फैसल & डॉ. रेशमा अंसारी, रायपुर (छ.ग.) ||151

39) गोविन्द मिश्र की कहानियों में सामाजिक यथार्थ
सुदेश कान्त, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) ||155

40) वैदिक साहित्य की भौगोलिक पृष्ठभूमि
Surendra Kumar ||159

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

31

नारी पात्रों में द्वंद्व एवं संकल्प की सशक्त हस्ताक्षर : कृष्णा सोबती

एस. कुमार गौर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शास० रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया,
राजनांदगाँव (छ०ग०)

डॉ० (श्रीमती) बी० एन० जागृत
शोधनिर्देशक,
शास० दिग्विजय महा० राजनांगाँव, छ०ग०

****

शोधसार :—

'साहित्य' समाज का दर्पण है, जिसमें मनुष्य का यथार्थ समाहित होता है। साहित्यकार मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से पुष्ट करता है। स्वातंत्र्योत्तर कथा—साहित्य को आधुनिक भाव—बोध एवं प्रगतिशील, सृजनशीलता की पृष्ठभूमि गढ़ने वाली लेखिकाओं या उपन्यासकारों में कृष्णा जी अग्रणी है। युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने कथा—साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। लोकतांत्रिक मूल्यों को अपने अस्तित्व का अभिन्न अंग मानने वाली कृष्णा सोबती नागरिक अधिकार और लेखकीय सम्मान के लिए आजीवन संघर्षरत रहीं। वे महिला सशक्तिकरण के पक्षधर रहीं, कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रस्तुत स्त्री पात्रों के अंतर्द्वंद्व एवं संकल्प के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी—मन के द्वंद्व को पात्रों में जीवंत रूप दिया है। नारी जीवन की पीड़ा और दर्द को गहराई से अनुभूत कर व्यक्त किया है।

कृष्णा सोबती अपने जिंदादिल व्यक्तित्व से मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीड़ा और दर्द को वे गहराई से लिखती है। इसी कारण उनका लेखन पाठकों के मर्म को छू जाता है। वे हिन्दी साहित्य की उन चद कालजयी रचनाकारों में से एक हैं, जिनका सम्मान उम्र के साथ घटा नहीं बल्कि बढ़ा है। युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द :— साहित्य, समाज, चेतना, विमर्श, संघर्ष, प्रेम, द्वंद्व, वेदना।

उद्देश्य एवं उपादेयता :—

१. कृष्णा सोबती की रचनाओं में नारी—विमर्श एक विशेष दृष्टिकोण के साथ उपस्थित है। शोधपत्र के माध्यम से सोबती जी के कथा साहित्य में नारी जीवन की संघर्ष, चेतना, एवं संकल्प के रूप को देखने एवं जानने का प्रयास होगा।

२. उनकी रचनाओं में उपस्थित नारी पात्रों का अध्ययन कर नारी जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए, सोबती जी के कथा साहित्य में उनके समाधान के रूप को प्रस्तुत करना भी इस शोध कार्य का उद्देश्य होगा। जिससे स्त्री के प्रति समाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन एवं प्रगतिशील चेतना में वृद्धि हो सकेगी, ऐसा मेरा विष्वास है।

३. कृष्णा सोबती जी का व्यक्तित्व युग शिल्पी के रूप में स्वीकार्य है। आजीवन लेखन से जुड़ी रहकर वे मानव अधिकारों एवं स्वतंत्रता के लिए लिखती रही। एक साहित्यकार के रूप में समाज को उन्होंने वह सब कुछ दिया, जो वह अपने लेखन के माध्यम से दे सकती थी।

प्रस्तावित शोध—कार्य उपादेयता की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। कृष्णा सोबती का जीवन, संघर्ष एवं संकल्प का पर्याय है। शोध अध्ययन से जहाँ स्त्री मन के द्वन्द्व को समझने में मदद मिलेगी वहीं समाज में सकारात्मक विचारों का निर्माण हो सकेगा। उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी समस्याओं को समझकर इसके निवारण के संबंध में नए दृष्टिकोण का विकास हो सकेगा। साहित्यानुरागियों एवं साहित्यकारों में साहित्यिक दृष्टिकोण का निमार्ण हो

सकेगा। समाज में आधुनिक एवं प्रगतिशील चेतना का विकास हो सकेगा।

विषय प्रवेश :—

'साहित्य' समाज का दर्पण है, जिसमें मनुष्य की यथार्थ समाहित होता है। देशकाल, परिस्थितियों, संस्कृतियों का वास्तविक दर्शन साहित्य में है। साहित्यकार मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से पुष्ट करता है। भारतीय साहित्य की विपुल संपदा ने सदैव प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीय मानस की ऊँचाई को विश्व पटल पर गौरान्वित किया है। जिन साहित्यकारों, साहित्यिक मनीषियों, विद्वतजनों के लेखनी व विचारों से हमारा साहित्य—संसार समृद्धि हुआ है, हम सदैव उनके योगदान के ऋणी रहेंगे।

आधुनिक काल की साहित्यिक—संसार में कृष्णा सोबती जी 'शताब्दी' की उपलब्धि है, 'हस्ताक्षर' है। आधुनिक कथा—साहित्यकार के रूप में उनका अपना अलग रूतबा है। अनेकाविध विशयों तथा विधाओं में लेखन कर उन्होंने अपनी मेधावी प्रतिभा का परिचय दिया है। कृष्णा सेबती भारतीय समाजिक जीवन तथा अपनी धरती के साथ एकाकार हुई लेखिका है। उनका जीवन साधारण होते हुए भी असाधरण है। स्वयं अपना अनुभवजगत् ही उनका समग्र साहित्य प्रतीत होता है। कृष्णा सोबती का समृद्ध व्यक्तित्व और लेखन परम्परा ही उनके सफल जीवन का परिचायक है।

यही कारण है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री मन की परतों की सौष्ठव पूर्ण अभिव्यक्ति की है। उनकी कहानियों, **'बादलों के घेरे'**, **'लामा'**, **'तीन बहनें'**, **'सिक्का बदल गया'**, **'कुछ नहीं कोई नहीं'**, के साथ—साथ, अधिकांश कहानियों में स्त्री के संघर्ष के साथ ही संकल्प का चित्रण दिखाई देता है।

व्यक्तित्व परिचय :— बहुमुखी प्रतिभा के धनी कृष्णा सोबती का परिचय इस प्रकार है —

जन्म परिचय :— कृष्णा सोबती जी का जन्म १८ फरवरी सन् १९२५ को गुजरात (जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है) में हुआ था। आपके पिता श्री पृथ्वीराज सोबती फौज में थे। वे बेहद अनुशासन प्रिय थे। जिनका प्रभाव कृष्णा जी पर भी आजीवन पड़ा। उनकी माता जी का नाम दुर्गा देवी सोबती था, कृष्णा जी अपनी माँ की लाड़ली थी। उनको भी अपनी माँ से अत्यधिक लगाव था। अंतिम सांस तक कृष्णा जी अपनी माँ की सेवा करती रही। कृष्णा जी ने अपने बचपन में ही बहुत सारी साहित्यकारों की रचनाएँ पढ़ ली थी। उनके घर के माहौल में न ज्यादा कड़ा अनुशासन था और न खुलापन। उनकी राय में ''घर के खुले लचकीले अनुशासन ने जहाँ हमें खुलने—पनपने का मौका दिया वहाँ इसकी कड़ी व्यवस्था में हमारे चुनावों को भी तय किया।''

शिक्षा :— कृष्णा जी की स्कूली शिक्षा दिल्ली एवं शिमला में हुई। लाहौर में कालेज की शिक्षा हुई। भारत—पाकिस्तान विभाजन के कारण उनकी शिक्षा अधूरी रह गई। सिर्फ बी० ए० (दर्शन शास्त्र) तक पढ़ने का अवसर उन्हें मिला। गाँव एवं शहरों दोनों जगह शिक्षा प्राप्त करने के कारण उनकी साहित्यिक रचनाओं में दोनों संस्कृतियाँ दिखाई पड़ती है। लगभग—चालीस की दशक से आंरभ की अपनी साहित्यिक यात्रा में उन्होंने विभिन्न विषयों, विधाओं पर विभिन्न समस्याओं को लेकर अपनी संजीदा उपस्थिति दर्ज कराने वाली शताब्दी की मुखर थी।

मृत्यु :— कृष्णा सोबती का अवसान २५ जनवरी सन् २०१९ को ९३ वर्ष की उम्र में दिल्ली के एक निजी अस्पताल में प्रातः ८:३० बजे हुआ। 'अपनी विशिष्ट एवं जरूरी लेखन के रूप में उन्होंने वह दिया है, जिसे निकाल देने पर हिन्दी—रचना सम्पदा का एक बड़ा इलाका खाली नजर आएगा।'

रचना—संसार :—

आधुनिक कथाकारों में कृष्णा सोबती जी का अलग स्थान है। उनका रचना—संसार विषय वैविध्य लिए हुए हैं। उन्होंने न केवल कविताओं पर बल्कि कहानी, उपन्यास, आलोचना—साहित्य को अपनी लेखनी और रचनाओं से समृद्ध किया है। कहानीकार के रूप में अपनी गद्य लेखन की शुरूआत करने वाली कृष्णा सोबती जी ने बाद में उपन्यास को अपना मूल लेखन का केन्द्र मानकर रचनाएँ रची। आधुनिकताबोध एवं नवसृजन की श्रृंखला में उन्होंने अपनी विशिष्ट लेखन शैली से दमदार उपस्थिति दी उनका विवरण इस प्रकार है :—

उपन्यास :—डार से बिछुड़ी, सूरजमुखी अंधेरे के, जिंदगीनामा, दिलो—दानिश, समय—सरगम, चॅन्ना, मित्रो मरजानी, यारों के यार, तिन पहाड़, ऐ लड़की, जैनी महरबान सिंह, गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान

कहानी संग्रह :— बादलों के घेरे में (बादलों के घेरे, दादी अम्मा, भोले बादशाह, बहनें, बदली बरस गयी, गुलाबजल गंडेरियाँ, कुछ नहीं—कोई नहीं, टीलों ही टीलों, अभी उसी दिन ही तो, दोहरी सांझ, डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा, जिगरा की बात, खम्माघणी अन्नदाता, सिक्का बदल गया, आजादी शम्मोजान की, कामदार भीखम लाल, पहाड़ों के साये तले, एक दिन न, गुल था न चमन था, कलगी, नफीसा, मेरी माँ कहाँ, लामा, दो राहें दो बाहें)

यात्रा—आख्यान :— १. बुद्ध का कमण्डल :— लद्दाख — २०१२

विचार / संवाद / संस्मरण :—

संस्मरण (रेखाचित्र) :—

१. हम हशमत (भाग—१) — १९७७
२. हम हशमत (भाग—२) — १९९९
३. हम हशमत (भाग—३) — २०१२
४. हम हशमत (भाग—४) — २०१९
५. सोबती एक सोहबत (प्रतिनिधि रचनाएँ) — १९८९
६. सोबती — वैद संवाद (संवाद) — २००७
७. शब्दों के आलोक में (संस्मरण) — २००५
८. मुक्तिबोध : एक व्यक्तित्व सही की तलाश में (आलोचना) — २०१७
९. लेखक का जनतंत्र (साक्षात्कार)— २०१८
१०. मार्फत दिल्ली (संस्मरण) — २०१८

पुरस्कार एवं सम्मान :—

कृष्णा सोबती जी की साहित्यिक प्रेम ने ही उन्हें स्वतंत्र लेखन की ओर प्रेरित किया और सन् १९८० के बाद वे सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद स्वतंत्र रूप से लेखन को ही अपनी साधना एवं आजीविका का मार्ग चुना। सतत् रूप से अपने जीवन के अंतिम पड़ाव ९३ वर्ष की उम्र तक वे अपनी लेखनी से साहित्य को समृद्ध करती रही। यही कारण है कि उनके समर्पित साहित्य सेवा को अनेक पुरस्कारों एवं सम्मान से सम्मानित किया गया, जिसका विवरण इस प्रकार है —

१. साहित्य अकादमी पुरस्कार (ज़िंदगीनामा)—१९८०
२.साहित्य शिरोमणी पुरस्कार (पंजाब सरकार)—१९८१
३. हिंदी अकादमी पुरस्कार — १९८२
४. साहित्य अकादमी फेलीशिप — १९९६
५. मैथलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान — १९९६—९७
६. शलाका सम्मान —२०००—२००१
७. ५३ वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार — २०१७ (भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान)

अन्य :—

साहित्य कला परिषद् पुरस्कार
कथा चूणामणि पुरस्कार
डी० लिट् की मानद उपाधि (सॉस्कृतिक अवदान के लिए)— हैदराबाद केन्दीय विश्वविद्यालय द्वारा

उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय, जो इस प्रकार है —

'डार से बिछुड़ी' कृष्णा जी की प्रथम प्रकाशित उपन्यास है। जिसका प्रकाशन सन् १९५८ में हुआ। यह उपन्यास ऑचलिक जीवन की कथा प्रस्तुत करती है। परम्पराओं और रूढ़ियों में जकड़ी नारी के फिसल जाने पर उसके भटकनें की कहानी है। इसकी नायिका 'पाशो' एक निष्कलंक ग्राणीण युवती है। पाशो एक बार डार से बिछुड़ जाने पर उसे बहुत सारे कटीले रास्तों, पगडंडियों से गुजरना पड़ता है। उसकी माँ उसे छोड़कर शेखजाती के साथ भाग गई है। माँ के इस कुकर्म का फल बेचारी 'पाशो' को भोगना पड़ता है। उसके मामुओं द्वारा पिटाई, जान से मारने की धमकी पाशो के लिए मर्मांतक पीड़ा है। 'करमजली' के नाम से नामित पाशो अंत में अपनी माँ के पास हवेली में जाती है, लेकिन अतंत: उसके पिता शेखो, पाशो को दीवान के घर पहुँचा देता है। जहाँ उनका विवाह दीवान के साथ होता है, अनमेल विवाह के कारण पाशो का जीवन बर्बाद हो जाता है। डार से बिछुड़ी पाशो का न कोई ठौर है, और न कोई ठिकाना। परंपराओं और रूढ़ियों में जकड़ी पाशो फिसल गई। अंत में पाशो अपनी भाई, मौसी, माँ से मिल जाती है। डार से बिछड़ी पाशो फिर से डार में आ मिली। लेखिका कृष्णा सोबती जी ने पाशो के रूप में नारी संघर्ष का मर्मस्पर्शी चित्र उकेरा है। नारी की दुर्दशाओं

का सही मार्मिक आंकलन द्वारा पाठकीय संवेदना को उभारने में नारी जीवन को घिरी दीवारों पर दरार डालने में कृष्णा सोबती को असाधारण सफलता प्राप्त हुई है। **'मित्रो मरजानी'** कृष्णा सोबती जी का दूसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन १९६७ में हुआ। यह पंजाब प्रांत के आँचलिक जीवन पर आधारित है। एक संयुक्त परिवार में घटित होने वाली झगड़े–फसाद, प्यार–मोहब्बत, रोना–हँसना आदि के यथार्थ चित्रण के साथ नारी की सहानुभूति पूर्ण कहानी को प्रस्तुत करती है।

'मित्रो' कृष्णा सोबती द्वारा सृजित एक अमर पात्र है। जिसके माध्यम से नारी के दो विलक्षण विशेष्टताएँ दी है – परम्परागत रूढ़ नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोही और दूसरी सनातन मानवीय मूल्य के प्रति अगाध आस्था। मित्रो अपने अधिकार को याचक या योद्धा के रूप में नहीं मांगती। सबसे पहले वह आत्मबल संचित करती है। सारे आदर्शों एवं परंपरागत मूल्यों से चिढ़कर विद्रोही बनकर नैतिकता को चुनौती देती हुई नई चेतना को व्यक्त करती है। वह संमुजित सामाजिक भावना का विरोध करती है, मित्रो के चरित्र में प्रारंभ में वासना पूर्ति की चाह दिखाई देती है किन्तु अंत में अपने पति के प्रति निष्ठा जागृत होती है। वह अनैतिकता की ओर नहीं जा पाती। आज बदलते सामाजिक परिवेश में नैतिकता–अनैतिकता संबंधी नई परिभाषाएँ बन रही है। 'मित्रो मरजानी' की नायिका मित्रो का चरित्र परिवर्तित संदर्भ में नारी की नई मानसिकता का परिचायक है, जो लेखिका कृष्णा सोबती जी की प्रगतिशील रचना धर्मिता एवं सौष्ठवपूर्ण अभिव्यक्ति का प्रमाण है।

कृष्णा सोबती की उपन्यास **'ज़िदगीनामा'** का प्रकाशन सन् १९७९ में हुआ। यह एक आँचलिक उपन्यास है। उपन्यास का समय प्रथम विश्वयुद्ध का है। इसमें विभाजन पूर्व पंजाब की कड़ी जिन्दगी की कुरूपता है। सन् १९८० में इसे **साहित्य अकादमी पुस्कार** से सम्मानित किया गया। इसमें पंजाब की विगत शती का जिन्दगी का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है। 'ज़िदगीनामा के केन्द्र में 'शाहनी' को रखा गया हैं, लेकिन हिंदू–मुसलमानों की सांझा–संस्कृति के बीच के लम्बे काल प्रवाह में घटित सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों को बहुत प्रमाणिक रूप में अंकित किया गया है। अन्याय के प्रति हथियार उठाने वाली प्रतिरोध चेतना की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। तात्कालीन सामाजिक एवं साँस्कृतिक जीवन की रूढ़ियों, प्रथाओं, परम्पराओं, मान्यताओं, अंधविश्वासों का वर्णन किया गया है तथा इनके विरोध में नारी पात्रों का चित्रण किया गया है, जो लेखिका के प्रगतिशील सृजनात्मक चेतना का परिचायक है।

'सूरजमुखी अंधेरे' के उपन्यास में नारी–जीवन की एक मनोवैज्ञानिक समस्या को उभारा गया है। उपन्यास रत्ती की कहानी कहता है। जो शैशवकाल में ही किसी अजनबी के बालात्कार का शिकार हो जाती है। इस घटना ने उनके जीवन को कटु बना दिया है। इस घटना ने उसे उसके दोस्तों, सामाजिक संबंधों से विलग कर दिया है, फलत: वह असहिष्णु, क्रूर और फ्रिजड़ हो जाती है। बड़ी होने पर समाज उसे कामुक दृष्टि से देखता है। उपेक्षा, दुश्मनी और व्यंग की दीवारों ने उसे सभी से अलग कर दिया है।

अंत में 'दिवाकर' के रूप में जब उसे सम्मान और स्वीकृति देने वाला व्यक्ति मिलता है, जिसके कुशल व्यवहारों से रत्ती अपनी मानसिक बीमारी से मुक्त हो जाती है। मानव–मन के मानसिक संघर्ष में अंतत: रत्ती इसकी मुक्ति की तलाश में दृढ संकल्प के साथ सफल होती है। जो उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे' के कथ्य को स्पष्ट करता है।

'दिलो दानिश' कृष्णा सोबती जी का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। भारत में मुस्लिम–शासन के समय धीरे –धीरे एक मिली–जुली संस्कृति विकसित हो रही थी। इस तबके का खान–पान, वेशभूषा, लहजा सब कुछ मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित था। कृष्णा सोबती ने 'दिलो दानिश' में इस परिवेश और उसमें केन्द्रित कृपानारायण वकील की उलझी हुई जिंदगी का, हवेली और फराशतखाना के द्वन्द्व का बहुत ही विश्वनीय और मार्मिक चित्रण किया है। हवेली का प्रतिनिधित्व करने वाली कुटुम्बप्यारी और फराशतखाने का प्रतिनिधित्व करने वाली महकबानों दोनों के अंकन में लेखिका ने अद्भूत रचनाशीलता का परिचय दिया है। पारिवारिक संहिता, पत्नी और प्रेमिका के बीच झूलता

कृपानारायण का चरित्र भी बहुत जोरदार और अपनी परिणति में अत्यंत करुण है।

विशेष रूप से महक बानो के चरित्र–चित्रण में उनकी रचनाशीलता अपने उत्कर्ष पर है। उसकी परिणति जिस तेजस्विता में होता है, उसके सामने परम्परागत पत्नी का कद बहुत छोटा हो जाता है। यह उपन्यास महकबानो के औरत होने की कहानी को प्रस्तुत करती है। जब वह अंगिया, ओढ़नी और सलवार से भिन्न एक स्वतंत्र और फैसला लेने वाली औरत के रूप में संघर्ष करके अपनी पहचान बनाने में सफल होती है। जो नारी के द्वन्द्व एवं संकल्प की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को पुष्ट करता है।

कृष्णा सोबती जी द्वारा रचित उपन्यास **'ऐ–लड़की'** का प्रकाशन १९९१ में हुआ। ऐ–लड़की' पूर्णतः नारी–जीवन पर केन्द्रित उपन्यास है, जिसमें नारी के धीरे–धीरे बदलते दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है। इसमें नारी को सामाजिक ढाँचे के केन्द्र में रखकर, सती–सवाई परंपरा के विरोध विशुद्ध नारी के रूप में रखने एवं देखने की कोशिश की गई है। अम्मू और उसकी बेटी, उपन्यास के मुख्य पात्र है। जहाँ अम्मू और उसकी बेटी में काल का लम्बा अंतराल है। अम्मू समाज में बुजुर्ग वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है, जिसमें सामाजिक बंधन, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्य की प्रधानता है तो दूसरी ओर बेटी आधुनिक समाज में व्याप्त जड़ता का प्रतिनिधित्व करते हुए परिवार और विवाह संस्कार पर प्रश्नचिह्न लगाती है। परस्पर संवाद के माध्यम से एक दूसरे का चरित्र खुलते जाता है। अम्मू गृहस्थ–जीवन का पालन करते हुए जीवन भर यथार्थ धरातल पर संघर्ष करती है जबकि उसकी बेटी, आधुनिक मानसिकता के प्रभाव स्वरूप अपने अलग कल्पना–लोक में विचरण करती है। माँ और बेटी दोनों ही नारी–मुक्ति के पक्षधर है, पर दोनों के दृष्टिकोण में भेद है। मानसिक द्वद्व एवं संघर्ष के बीच का चित्रण कृष्णा सोबती जी ने किया है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास **'समय सरगम'** का विषय एकदम अनूठा है। इसमें वृद्धों की दुनिया का ऐश्वर्य लोक रचने की कोशिश है। 'समय सरगम' के बहाने कृष्णा सोबती जी ने बुजुर्गों की दुनिया में धरती के साथ ऐसे अनेक मनोभावों को सूक्ष्म स्तर पर अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, जिससे हमारा युवा वर्ग बेखबर है। वह प्रायः बुजुर्गों को समझाने में गलती कर जाते है। उपन्यास की मुख्य पात्र 'आरण्या' और उसका पड़ोसी ईशान के संवाद के माध्यम से जीवन के अंतिम पड़ाव के संघर्ष और संकल्प अभिव्यक्ति का प्रयास है। बस्तियों में जीते वरिष्ठ नागरिकों की यह कहानी जितनी प्रामाणिक है, उतनी ही संवेदन सिक्त भी।

इसी प्रकार नारी समस्याओं का चित्रण हमें उनके, यारों के यार, तिन पहाड़, ऐ लड़की आदि उपन्यासों में भी मिलता है। जहाँ नायिका अलग–अलग संदर्भों में संघर्ष करती हुई दिखायी गई है। उन्होंने अपने कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' में २४ कहानियों को शामिल किया है। जिसमें लामा, सिक्का बदल गया, दादी अम्मा, बहनें, बदली बरस गयी, डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा इत्यादि के माध्यम से नारी विमर्श का विस्तृत अध्याय हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। अपने यात्रा संस्मरण 'बुद्ध का कमण्डल : लद्दाख' के माध्यम से वहाँ की सांस्कृतिक बोध का दर्शन कराया है, तो अपने संस्मरण, विचार, आलोचना, के माध्यम से विभिन्न विषयों पर खुले रूप में अपने विचार व्यक्त किये है।

वे अपने प्रबल एवं स्पष्ट लेखन के लिए सदैव याद किए जाएगें। भाषा वैविध्य से अपनी रचनाओं में तहलका मचाने वाली कृष्णा सोबती अपनी भाषा और रचना से कभी समझौता नहीं की। यही कारण है कि १९५२ में लिखा उपन्यास चन्ना २०१९ में प्रकाशित हुई। वे तटस्थ लेखकों में से एक थी।

निष्कर्ष :— इस प्रकार हम पाते है, कि कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी पात्रों के चित्रण में द्वन्द्व एवं संकल्प की अभिव्यक्ति सहज रूप में दिखाई पड़ती है। समाज में फैले कुरीतियों, पुरूष प्रधानतावादी मानसिकता के घेरों को तोड़कर प्रगतिशील चेतना के साथ साहित्य सृजन किए है, जो एक साहित्यकार का समाज के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता है। जिसमें सोबती जी पूरी तरह खरे उतरती है। यही कारण है कि उनके साहित्य में समय की माँग, नया दृष्टिकोण,

सामाजिक चेतना, का विभिन्न स्वरूप देखने को मिलता है।

उनकी साहित्यिक सेवा के लिए उन्हे राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर विभिन्न पुरूस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् २०१७ में उन्हें साहित्य में अमूल्य योगदान हेतु साहित्य का सर्वोच्च ५३ वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अत: उनके संस्कृतिक अवदान के लिए उन्हें शताब्दी की उपलब्धि या अमिट हस्ताक्षर कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कृष्णा सोबती जैसे साहित्य साधकों के जीवन का अवसान भारतीय साहित्य जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है।

संदर्भ ग्रंथ :—

१. सोबती कृष्णा, डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९५८

२. सोबती कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९७२

३. सोबती कृष्णा, जिंदगीनामा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९७९

४. सोबती कृष्णा, दिलो—दानिश, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९९३

५. सोबती कृष्णा, समय—सरगम, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, २०००

६. सोबती कृष्णा, चन्ना, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, २०१९

७. सोबती कृष्णा, मित्रों मरजानी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६७

८. सोबती कृष्णा, यारों के यार, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६८

९. सोबती कृष्णा, तिन पहाड़, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६८

१०. सोबती कृष्णा, ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९९१

११. सोबती कृष्णा, जैनी महरबान सिंह, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, २००७

१२. सोबती कृष्णा, गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, २०१७

१३. सोबती कृष्णा, बादलों के घेरे (कहानी संग्रह) राजकमल प्रकाशन दिल्ली, १९८०

32

नाथपंथ का हठयोग

डा० प्रवीण कुमार गुप्त
भगवान दास शकुंतला देवी महिला महाविद्यालय,
बदुरहिया चौराहा, चौरी चौरा, गोरखपुर
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर (उ०प्र०)

समस्त भारतीय धर्म दर्शन एवं उपासना पद्धतियॉ में योग का महत्व सर्वमान्य है। भारतीय संस्कृति की कोई भी विचार धारा ऐसी नहीं है, जिसमें योग की महत्ता न माना गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति के अभ्युदय से वर्तमान समय में भी आध्यात्मिक साधन में योग प्राचीन भारतीय परम्परा और संस्कृति की अमूल्य देन है भारतीय परम्परा की यह विशिष्टता है कि यह जीवन की समस्याओं का मात्र सैद्धान्तिक विवेचना नहीं करता बल्कि उसका व्यावहारिक समाधान योग के माध्यम से भीप्रस्तुत किया गया है और यह समाधान तात्कालिक न होकर शाश्वत होता है और इस शाश्वत समाधान के रूप में मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना है। सम्पूर्ण विद्या के रूप में योग साधना की दो समानान्तर धाराऐं पतंजलि योग दर्षन एवं महा योगी गोरक्षनाथ द्वारा प्रतिष्ठापित नाथपंथ क्रियात्मक योगहठ योग है। यह दोनों पद्धतियॉ एक दूसरे की पूरक है।

भारतीय साधना एवं धर्म में योग साधना के उन्नयन में महायोगी गुरू गोरक्षनाथ का योगदान अमिट है। अपने समय में ही नहीं बल्कि वर्तमान परिस्थितियों की समाधान करने में सक्षम है। महायोगी गोरखनाथ द्वारा तत्कालिन सामाजिक धार्मिक जीवन में नाथपंथ का प्रवर्तन करके एक नये युग का सूत्रपात किया है। भारत वर्ष के समस्त सम्प्रदायों के जीवन पद्धति को नाथपंथ ने प्रभावित किया है। गुरू गोरक्षनाथ ने अपने

वैश्विक जीवन-मूल्य और गांधी

डॉ. रमाकान्त

जन्मतिथि : 10-06-1979

पिता : श्री मनई भगत

माता : श्रीमती पानमती देवी

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

: यूजीसी (नेट), जून 2009

: पी-एच.डी. (हिंदी विभाग), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 2013

उपलब्धियाँ : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित व अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन

लेखन : 1फैसला (कहानी संग्रह)

2 प्रिया (उपन्यास)

सम्पादन : 1 डॉ. रामविलास शर्मा और उनका चिन्तन

: 2 आधुनिक कथा चिन्तन एवं आधुनिकता बोध

सम्पर्क : ग्राम- भिंगारी बाजार, खण्ड-3, पोस्ट भिंगारी बाजार, जिला- देवरिया, उत्तरप्रदेश, भारत, पिन-274702

चलभाष- 096463-75961

सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय, कालका पंचकुला, हरियाणा।

ईमेल : ramakantphd@gmail.com

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद
www.sahityasanchay.com
e-mail : sahityasanchay@gmail.com
Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 200

ISBN : 978-93-89809-51-0

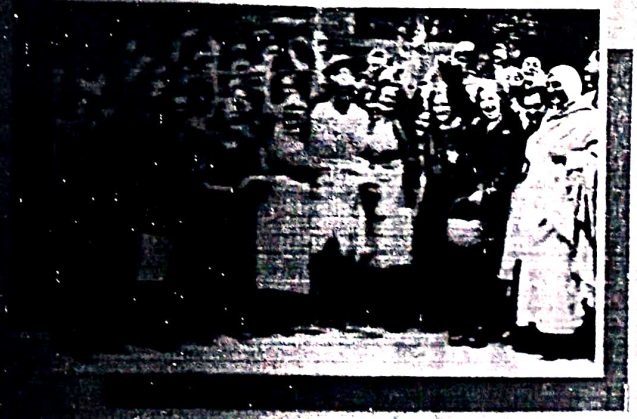

© लेखक

ISBN : 978-93-89809-51-0

प्रकाशक

साहित्य संचय

वी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडो, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2021
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

VAISVIK JEEVAN-MULYA AUR GANDHI
Edited by Dr Ramakant

साहित्य संचय, वी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

आशीर्वचन

श्रीमती भावना विक्रय पंडित
प्रिंसिपल, एन.एम. जैन, गर्ल्स सीनियर सेकेन्डरी, स्कूल
भारत नगर चौक, लुधियाना

रमाकांत जी की यह पांचवी पुस्तक 'वैश्विक जीवन मूल्य और गांधी' है। मुझे प्रसन्नता है कि लेखन कार्य में, ये अपने समय का ज्यादा भाग देते हैं और कामना करती हूं कि लगातार क्रियाशील रहें।

अनुक्रम

1. हरियाणवी लोक साहित्य में नारी की दशा — 9
डॉ. रामाकान्त

2. भारतीय जीवन-मूल्य और-विश्व — 20
डॉ. लक्ष्मी तिवारी

3. समकालीन भारत एवं विश्व में गाँधी के चिंतन व जीवन-सिद्धांतों की प्रासंगिकता — 31
अभिषेक सौरभ

4. महाभारतकाल में भारतीय जीवन-मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन — 38
आशा सिंह

5. भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व — 43
रोशनी चंद्राकर

6. भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य — 48
मनोज कुमार जायसवाल

7. भारतीय संस्कृति : मानवीय जीवन-मूल्य — 54
डॉ. नीलाक्षी जोशी

8. भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व — 59
ईश्वर चंद्र

9. भारतीय जीवन-मूल्य — 65
प्रा. आनंद रणजीत वक्षी

10. भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य में प्रतिबिंबित वैश्विक जीवन-मूल्य — 68
भूपेश

11. भारतीय साहित्य में अंतर्निहित जीवन-मूल्य 76
एस. कुमार गौर

12. भारतीय जीवन-मूल्य और विश्व 80
डॉ. जोगेंद्र सिंह विसेन

13. नारी-साहित्य और भारतीय जीवन-मूल्य 86
डॉ. फ्रान्सिस्का कुजूर

14. स्त्री-मुक्ति और गाँधी 95
नेहा साहू

15. प्रासंगिकता और गाँधी 101
शीतल प्रसाद

16. वैश्विक आतंकवाद और गाँधी 106
कुमारी गंगेश्वरी सिंह

17. वैश्विक आतंकवाद और गाँधी 115
डॉ. वासुदेव प्रजापति

18. वैश्विक आतंकवाद और गाँधी 120
मुकेश कुमार

19. वैश्विक आतंकवाद की समाप्ति में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता 134
डॉ. राहुल उठवाल

20. वैश्विक आतंकवाद और गाँधीवाद 143
लक्ष्मी अल्डा

21. राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी 152
और महात्मा गाँधी का दृष्टिकोण
डॉ. रामानेक कुशवाहा, डॉ. रौनक कुमार

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

हरियाणवी लोक साहित्य में नारी की दशा

डॉ. रामाकान्त
हिन्दी डिपार्टमेण्ट
गवर्नमेन्ट पी.जी. कॉलेज कालका
पंचकुला, हरियाणा

हरियाणा की संस्कृति में नारी को इतनी स्वतन्त्रता नहीं है कि वह अपने भावों को स्पष्ट रूप से कह सके। नारी के परम्परागत रूप को ही आज भी स्वीकार किया जाता है। दमित वासनाएं, इच्छाएं, कुण्ठा, हीनभावना, घुटन, तनाव, उदासी, व्याकुलता, स्वतन्त्रता की छटपटाहट आदि मनोभावों को इन गीतों के माध्यम से चित्रित किया गया है। मनोवैज्ञानिकता के माध्यम से इन गीतों में संस्कृति की झलक मिलती है।

सावन मास के गीतों में सयोंग-वियोग श्रृंगार का मिश्रण मिलता है। वहू अपने पीहर में होती है। नारी अपने झूलने की मनोकामना को रोक नहीं पाती। उसकी मां उसे झूलने की मनाही करती है तो भी नारी झूलने अवश्य जाती है। वह प्रियतम से मिलने की कामना करती है।

उसको पिया की स्मृति हो आती है। अतः पपीहे को पिऊ-पिऊ न करने का आग्रह करती है। जायसी कृत 'पदमावत' की नायिका की तरह उसका हृदय विरहाग्नि में दग्ध है। विधवा की पीड़ा को भी इन गीतों में वर्णित किया जाता है। व्याकुलता का एक उदाहरण देखिए–

"कोए पी-पी पपैया हे बैरी बोलता
कोए बालै से पीउ-पीउ के बोल
तूं मत बोलै रे पपैया बैरी नीम मैं
कोए सामण कै म्हीनैं आवैं तीलड़ी
कोए सब कै ए तीजां का चाव
तूं मत...

भारतीय साहित्य में अंतर्निहित जीवन-मूल्य

एस. कुमार गौर
सहायक प्राध्यापक शा. रानी सूर्यमुखी देवी
महाविद्यालय छुरिया, जिला-राजनांदगांव (छ.ग.)

"भारतीय साहित्य की परिधि जितनी व्यापक है, उतनी ही गहन भी। समग्र भारतीयता का बोध भारतीय साहित्य में होता है। कहना गलत न होगा कि भारतीयता की संकल्पना का साकार रूप ही है भारतीय साहित्य। भारतवर्ष की नानाविध जातियों, समूहों, वर्गों, समाजों की भावभूमि भारतीय साहित्य में परिलक्षित होती है। देश की विभिन्न भाषाओं, बोलियों में रचित इस साहित्य में भारतीयता के प्रायः सभी स्वर समवेत रूप से सुनाई पड़ते हैं।"[1]

भारतीय साहित्य जीवन-मूल्यों की अमूल्य निधि है। जो मानव जीवन का आधार है। आज भारत पूरे विश्व में अपनी साहित्यिक समृद्धि एवं जीवन-मूल्यों के लिए जाना जाता है। अनादिकाल से वर्तमान तक भारतीय संस्कृति जीवन-मूल्यों से परिपूर्ण रही है। इसलिए भारत को विश्वगुरु का पद मिला है। न जाने कितने वर्षों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहे, कितने आक्रमण को हमने सहन किया, युद्ध देखे, कितनी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का पतन हुआ लेकिन हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं परंपराएँ आज भी जीवित है, और आगे भी सदैव बनी रहेंगी। हमारी सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता हमारे जीवन-मूल्यों का बोध कराती है। लार्ड मेकाले ने कहा था कि-"मैंने संपूर्ण भारत में विचरण किया लेकिन मुझे यहाँ न कोई भिखारी, न कोई लूटेरा और न कोई चोर मिला। यहाँ के लोगों में उच्च नैतिक मूल्य है। जब तक हम उनके इस नैतिक मूल्य को और उनकी पुरानी शिक्षा पद्धति को खत्म नहीं करेंगे। तब तक हम भारत पर शासन नहीं कर सकते। जैसा कि हम चाहते हैं।"[2] अँग्रेजों की धारणा थी कि भारतीय मूल्यों को नष्ट करके ही हम यहाँ शासन कर सकते हैं। ब्रिटिश संसद में 02.02.1835 को उनके द्वारा कहा गया यह कथन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महत्त्व को प्रमाणित करता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिस पर उसका वास्तविक रूप प्रतिबिंबित होता है। इस दृष्टि से भारतीय साहित्य सदा समृद्ध रहा है। समाज एवं संस्कृति के पारस्परिक समन्वय से साहित्य का निर्माण होता है। समाज एक ओर व्यक्तियों के विचारों को दर्शाता है। तो संस्कृति जीवन-मूल्यों को। चाहे वह जीवन-मूल्य व्यैक्तिक हो, पारिवारिक हो या सामाजिक, हम कह सकते है कि साहित्य जीवन-मूल्य की संवाहिका है।

साहित्यकार स्वयं एक युग की घटना होता है, वह अपने काल की घटनाओं, परंपराओं, इतिहास को अमिट करता है। उनकी रचनाएँ अपने समाज एवं संस्कृति को आगामी पीढ़ियों को दे जाती हैं। जब किसी साहित्यकार द्वारा लिखित व्यवहारिक बातें लोक में समाविष्ट हो जाती है, तब वह किसी समाज की परंपराओं एवं संस्कृति के रूप में मान्य हो जाती है। सांस्कृतिक समृद्धि एवं संपन्नता के साथ जीवन-मूल्यों की दुशाला ओढ़े साहित्य सदैव समाज के लिए प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

भारतीय साहित्य में जीवन-मूल्य इस तरह घुला-मिला है, जहाँ से इनको निकाल पाना कल्पना से परे है। भारतीय साहित्य में जीवन-मूल्य भारतीय दर्शन का आधार है। इसी कड़ी में गोस्वामी तुलसी दास विरचित रामचरित मानस एक महाकाव्य, के रूप में एक युगबोध साहित्य के रूप जीवन-मूल्यों की विशिष्ट व्याख्या करती है। तुलसीदास ने अपनी इस रचना के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि लोक जीवन को नई दृष्टि दी है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में स्थापित किया है। आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, प्रजापालक, सखा, लोकरक्षक के रूप में उनके विराट व्यक्तित्व का चित्रण किया है। परिवार के मुखिया को किस प्रकार सभी के लिए समान दृष्टि एवं स्नेह रखना चाहिए, इसके महत्त्व को रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं कि -

"मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहूं एक।
पालइ पोशइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक।।"[3]

तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस के उत्तर कांड में रामराज्य की कल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया है। आदर्श समाज कैसा होना चाहिए तथा राजा-प्रजा के क्या-क्या कर्तव्य होने चाहिए? वे इस प्रसंग में लिखते हैं–

"दैहिक-दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।"[4]

रामराज्य में सभी लोग परस्पर प्रेम से रहते हैं, अपने-अपने धर्म का पालन

करते हैं। वेद एवं लोकशास्त्र के अनुरूप आचरण करते हैं। अपने-अपने धर्म पालन करते हैं। वेद एवं लोकशास्त्र के अनुरूप आचरण करते हैं। उनके राज्य में कोई दरिद्र, विद्याहीन, रोगी, दम्भी नहीं हैं। सभी धर्म पालन में रत हे। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि -

"नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना। नहिं कोई अबुधन लच्छन हीना।
सब निर्दभ धर्म रत पुनी। नर अरू नारि चतुर सब गुनी।।"

भरत जैसे आदर्श भाई के भातृत्व प्रेम को स्थापित करते हैं जिसको युवराज घोषित किए जाने के बावजूद भी वे राजसिंहासन छोड़कर अपने बड़े भाई श्रीराम की चरण पादुका को राजसिंहासन में स्थापित कर स्वयं वन को चले जाते हैं। आदर्श पत्नी के रूप में सीता के चरित्र का चित्रांकन किया है जो स्वयं राजवधू होते हुए भी 14 वर्ष के वनवास मे महलों का सुख छोड़कर अपने पति के साथ वनगमन को सहज स्वीकार करती है एवं प्रत्येक चुनौतियों का सामना करते हुए एक आदर्श पत्नी एवं पतिव्रता नारी का धर्म निभाती है।

तुलसी ने अपने काव्य में सभी आवश्यक मानवीय गुणों दया, क्षमा, करुणा, परोपकार, प्रेम, सहिष्णुता आदि का वर्णन किया है। इन गुणों से संपन्न व्यक्ति से ही अच्छे समाज का निर्माण हो सकता है। तुलसी के राम इन्हीं गुणों से विभूषित है, इसलिए वे कहते हैं ह। केवल राम ही उनके संकट मोचन हैं–

"एक भरों सो एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास।"

तुलसी के राम अवतारी हैं, जो संसार में धर्म की स्थापना एवं अधर्म के नाश हेतु मानव शरीर धारण किए हुए हैं–लोकरक्षक और लोकनायक के रूप में उनके चरित्र की स्थापना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि -

"जब-जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब-तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।"

लक्ष्मण भी अपनी पत्नी उर्मिला एवं राजदरबार के सुख को छोड़कर अपने बड़े भाई की सेवा के लिए वनवास जाने का निश्चय करते हैं एवं उनके प्रत्येक कार्य में अपना सहयोग प्रदान करते हैं। एक सखा के रूप में हनुमान श्रीराम के प्रत्येक कार्यों को सफलतापूर्वक करते हैं। वानरों की सेना की सहायता से लंका विजय जहाँ एक ओर सामाजिक भावना का बोध कराती हैं, तो वहीं दूसरी ओर नकारात्मक शक्तियों का, विषम परिस्थितियों में किस प्रकार मिल जुलकर सामना करना चाहिए

यह शिक्षा भी प्रदान करती हैं। सच्चे मित्र को किस तरह अपनी मित्रता निभानी चाहिए इसका प्रसंग प्रस्तुत करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं–

"जे न मित्र दुःख होहिं दुःखारी। तिन्हहि बिलोकत भारी।।
निज दुःख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुःख रज मेरू समाना।।"

श्रीराम चरित मानस में विभीषण द्वारा अन्याय, असत्य का साथ छोड़कर सत्य एवं न्याय का पक्ष लेकर उनका विरोध करना दिखाया गया है। सीताहरण को गलत बताया जाना तथा इसके लिए स्वयं मंदोदरी द्वारा अपने पति रावण का विरोध करना एवं सीता के प्रति संवेदना प्रकट करना नैतिक मूल्य का ही उदाहरण है।

आज के संदर्भ में हम पाते हैं कि वास्तविक जीवन से जीवन-मूल्य अपवर्जित हो रहे हैं। नैतिक सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा हैं परिणामतः व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में तनाव, झगड़े, संप्रदायवाद, शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि अपना मुख सुरसा की तरह फैला रहे हैं। आए दिन असामाजिक घटनाएँ घट रही है। पारिवारिक रिश्ते विश्रृंखलित होते जा रहे हैं। असामाजिक, अमानवीय घटनाओं से मानवता खुले आम शर्मसार हो रही है।

यहाँ यह कहना लाजमी होगा कि या तो हम साहित्य से दूर होते जा रहे हैं या इसमें अंतर्निहित जीवन-मूल्यों को समझ नहीं पा रहे हैं, जीवन की अंधी दौड़ में हम केवल सरपट दौड़े जा रहे है। जो मानव को दिशाहीन एवं अव्यवस्थित जीवन शैली की ओर ले जा रही है, जो कि एक बड़ी चुनौती है। एक बार पुनः हमें मूल्यों से अभिरंजित साहित्य के पन्ने पलटाने की आवश्यकता है। तभी हम अपनी सभ्यता, संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सफल हो पाएँगे। भारतीय साहित्य सदैव एक सजग प्रहरी के रूप में इसकी पैरवी करता है और करता रहेगा।

संदर्भ

1. डॉ. संतोष गिरहे, भारतीय साहित्य की चिंतन भूमि (संपादकीय)
2. https:eegoogleimageecnxe9r
3. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 608
4. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्रीराम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 930
5. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ.सं. 80
6. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ.सं. 27
7. डॉ. अशोक प्रतियोगिता साहित्य सीरिज। 147 पृ.सं 31
8. हनुमान प्रसाद पोद्दार श्री राम चरित मानस, कोड 81 गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 687

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

June 2021, Issue-03, Vol-01

अतिथि संपादक :

१. डॉ. राठोड अनिलकुमार

२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद

३. डॉ. भगवान कदम

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. बारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

"Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell 07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

43) हिंदी स्त्री विमर्श स्त्री : सम्मान
शीला कुमारी, संगम ||157

44) 'नारी मुक्ति के सवालों में मेरी तेरी उसकी बात'
प्रा. डॉ. शेख सैबाशिरीन हारुणरशीद, औरंगाबाद, (महाराष्ट्र) ||160

45) मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में नारी के बदलते आयाम
डॉ. शोभना कोक्काडन, Coimbatore ||163

46) रमणिका गुप्ता के उपन्यास और आदिवासी महिला विमर्श
डॉ॰ श्रीकान्त शुक्ल, जिला—सतना (म॰प्र॰) ||168

47) कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री चेतना की मुखर अभिव्यक्ति
एस कुमार गौर & डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत, राजनांदगाँव, छ.ग. ||172

48) सुमन राजे की कविता 'भानवी' में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श
डॉ. वंदना प्रकाश पाटील, जि— कोल्हापुर ||176

49) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री संघर्ष ('अल्मा कबूतरी' के विशेष संदर्भ में)
प्रा. वर्णेकर एम.व्ही., सातारा ||179

50) सुरेंद्र वर्मा एवं गिरीश कर्नाड के नाटकों में स्त्री—पुरुष संबंधों के अंतर्द्वंद्व
Dr. N. M Sreekanth, Payyanur ||181

51) "पिंजरे में पन्ना" उपन्यास में आदिवासी विमर्श
प्रा.डॉ. वसंत माळी, जि. औरंगाबाद ||185

52) आदिवासी साहित्य, संस्कृति और राजनीति
डॉ॰ दीप्ति सिंह, जिला—शहडोल (म॰प्र॰) ||188

53) शरद जोशी के लेखन में आदिवासी विमर्श का स्वर
काजल कुमारी सिंह, बीरभूम, पश्चिम बंगाल ||190

54) हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श
प्रा. कैलास बबन माने, विटा ||194

55) जंगल के आसपास उपन्यास में चित्रित आदिवासी संघर्ष—चेतना
डॉ. के नीरजा, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश ||198

56) आदिवासी जीवन की समस्या
डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकले, नासिक, महाराष्ट्र ||201

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | June 2021 Issue-03, Vol-01 | 0172

47

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री चेतना की मुखर अभिव्यक्ति

एस कुमार गौर
शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया,
राजनांदगाँव (छ.ग.)

डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत
शोध निर्देशक,
शास. दिग्विजय महा. राजनांदगाँव, छ.ग.

****

शोधसार :—

'साहित्य' समाज का दर्पण है, जिसमें मनुष्य का यथार्थ समाहित होता है । साहित्यकार मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से पुष्ट करता है । स्वातंत्र्योत्तर कथा—साहित्य को आधुनिक भाव—बोध एवं प्रगतिशील, सृजनशीलता की पृष्ठभूमि गढ़ने वाली लेखिकाओं या उपन्यासकारों में कृष्णा जी अग्रणी है । युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने कथा—साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है । लोकतांत्रिक मूल्यों को अपने अस्तित्व का अभिन्न अंग मानने वाली कृष्णा सोबती नागरिक अधिकार और लेखकीय सम्मान के लिए आजीवन संघर्षरत रहीं । वे महिला सशक्तिकरण के पक्षधर रहीं, कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रस्तुत स्त्री पात्रों के अंतर्द्वंद्व एवं संकल्प के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी—मन के द्वंद्व को पात्रों में जीवंत रूप दिया है । नारी जीवन की पीड़ा और दर्द को गहराई से अनुभूत कर व्यक्त किया है ।

कृष्णा सोबती अपने जिंदादिल व्यक्तित्व से मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीड़ा और दर्द को वे गहराई से लिखती है । इसी कारण उनका लेखन पाठकों के मर्म को छू जाता है । वे हिन्दी साहित्य को उन चंद कालजयी रचनाकारों में से एक है, जिनका सम्मान उम्र के साथ घटा नहीं बल्कि बढ़ा है । युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

विषय प्रवेश :—

'साहित्य' समाज का दर्पण है, जिसमें मनुष्य का यथार्थ समाहित होता है । देशकाल, परिस्थितियों, संस्कृतियों का वास्तविक दर्शन साहित्य में है । साहित्यकार मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से पुष्ट करता है । भारतीय साहित्य की विपुल संपदा ने सदैव प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीय मानस की ऊँचाई को विश्व पटल पर गौरान्वित किया है । जिन साहित्यकारों, साहित्यिक मनीषियों, विद्वतजनों के लेखनी व विचारों से हमारा साहित्य—संसार समृद्ध हुआ है, हम सदैव उनके योगदान के ऋणी रहेंगे ।

आधुनिक काल की साहित्यिक—संसार में कृष्णा सोबती जी 'शताब्दी' की उपलब्धि है, 'रत्नाकर' । आधुनिक कथा—साहित्यकार के रूप में उनका अपना अलग रुतबा है । अनेकानेक विषयों तथा विधाओं में लेखन कर उन्होंने अपनी मेधावी प्रतिभा का परिचय दिया है । कृष्णा सोबती भारतीय सामाजिक जीवन तथा अपनी धरती के साथ एकाकार हुई लेखिका है । उनका जीवन साधारण होते हुए भी असाधारण है । स्वयं अपना अनुभवजगत् ही उनका समग्र साहित्य प्रतीत होता है । कृष्णा सोबती का समृद्ध व्यक्तित्व और लेखन परम्परा ही उनके सफल जीवन का परिचायक है ।

यही कारण है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री मन की परतों की सौष्ठव पूर्ण अभिव्यक्ति की है । उनकी कहानियाँ, 'बादलों के घेरे', 'लामा', 'तीन बहनें', 'सिक्का बदल गया', 'कुछ नहीं कोई नहीं', के साथ—साथ, अधिकांश कहानियों में स्त्री के संघर्ष के साथ ही संकल्प का चित्रण दिखाई देता है ।

कृष्णा सोबती ने अपने जीवन अनुभव में तीन पीढ़ियों को जिया है । उन्होंने स्वतंत्रता के पूर्व स्त्रियों की दशा, समाज का दृष्टिकोण एवं उनकी स्थिति को देखा और समझा है । स्वतंत्र्योत्तर भारत में स्त्रियों की

बदलती भूमिका पर उन्होंने गहन विचार किया । देश के बदलते लोकतांत्रिक स्वरूप, बदलते सामाजिक दृष्टिकोण, मानव मूल्य — को उन्होंने समाज एवं देश के लिए खतरा बनाते हुए चुनौती के रूप में स्वीकार किये । वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में स्त्रियों को लेकर जो घटनाएँ घटित हो रही है वह भयावह व अमानवीय है । अपनी यथार्थ बोध एवं स्वतंत्र लेखन के जरिये कृष्णा सोबती जी ने अपनी उपन्यासों में वर्णित स्त्री पात्रों के माध्यम से एक नई बहस शुरू की । स्त्री की स्वतंत्रता, उनका आत्मसम्मान, आत्म निर्भरता, स्वावलंबन, अस्तित्वबोध, आधुनिकताबोध, लोकतांत्रिक अधिकारों के साथ बराबर की हिस्सेदारी — उनके लेखन के केन्द्र में रही । उनके उपन्यासों में वर्णित स्त्री पात्रों के संघर्ष एवं द्वंद्व की मुखर अभिव्यक्ति हुई है । जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

'डार से बिछुड़ी' कृष्णा जी की प्रथम प्रकाशित उपन्यास है । जिसका प्रकाशन सन् १९५८ में हुआ । यह उपन्यास आँचलिक जीवन की कथा प्रस्तुत करती है । परम्पराओं और रूढ़ियों में जकड़ी नारी के फिसल जाने पर उसके भटकने की कहानी है । इसकी नायिका 'पाशो' एक निष्कलंक ग्रामीण युवती है । पाशो एक बार डार से बिछुड़ जाने पर उसे बहुत सारे कटीले रास्तों, पगडंडियों से गुजरना पड़ता है । उसकी माँ उसे छोड़कर शेखजानी के साथ भाग गई है । माँ के इस कुकर्म का फल बेचारी 'पाशो' को भोगना पड़ता है । उसके मामुओं द्वारा पिटाई, जान से मारने की धमकी पाशों के लिए मर्मांतक पीड़ा है । 'करमजली' के नाम से नामित पाशों अंत में अपनी माँ के पास हवेली में जाती है, लेकिन अंततः उसके पिता शेखों, पाशो को दीवान के घर पहुँचा देता है । जहाँ उनका विवाह दीवान के साथ होता है, अनमेल विवाह के कारण पाशो का जीवन बर्बाद हो जाता है । डार से बिछुड़ी पाशो का न कोई ठौर है, और न कोई ठिकाना । परम्पराओं और रूढ़ियों में जकड़ी पाशो फिसल गई । अन्त में पाशो अपनी भाई, मौसी, माँ से मिल जाती है । डार से बिछड़ी पाशो फिर से डार में आ मिली । लेखिका कृष्णा सोबती जी ने पाशो के रूप में नारी संघर्ष का मर्मस्पर्शी चित्र उकेरा है । नारी की दुर्दशाओं का सही मार्मिक आकलन द्वारा पाठकीय संवेदना को उभारने में नारी जीवन को घिरी दीवारों पर दरार डालने में कृष्णा सोबती को असाधारण सफलता प्राप्त हुई है।

''मित्रो मरजानी'' कृष्णा सोबती जी का दूसरा उपन्यास है । इसका प्रकाशन १९६७ में हुआ । यह पंजाब प्रांत के आँचलिक जीवन पर आधारित है । एक संयुक्त परिवार में घटित होने वाली झगड़े—फसाद, प्यार—मोहब्बत, रोना—हँसना आदि के यथार्थ चित्रण के साथ नारी की सहानुभूति पूर्ण कहानी को प्रस्तुत करती है ।

'मित्रो' कृष्णा सोबती द्वारा सृजित एक अमर पात्र है । जिसके माध्यम से नारी के दो विलक्षण विशिष्टताएँ दी है — परम्परागत रूढ़ नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोही और दूसरी सनातन मानवीय मूल्य के प्रति अगाध आस्था । मित्रो अपने अधिकार को याचक या योद्धा के रूप में नहीं मांगती । सबसे पहले व आत्मबल संचित करती है । सारे आदर्शों एवं परम्परा मूल्यों से निकलकर विद्रोही बनकर नैतिकता को चुनौती देती हुई नई चेतना को व्यक्त करती है । वह संकुचित सामाजिक भावना का विरोध करती है, मित्रो के चरित्र में प्रारम्भ में वासना पूर्ति की चाह दिखाई देती है किन्तु अंत में अपने पति के प्रति निष्ठा जागृत होती है वह अनैतिकता की ओर नहीं जा पाती । आज बदलते सामाजिक परिवेश में नैतिकता—अनैतिकता संबंधी नई परिभाषाएं बन रही है । 'मित्रो मरजानी' की नायिका मित्रो का चरित्र परिवर्तित संदर्भ में नारी की नई मानसिकता का परिचायक है, जो लेखिका कृष्णा सोबती जी की प्रगतिशील रचना धर्मिता एवं सौष्ठपूर्ण अभिव्यक्ति का प्रमाण है ।

कृष्णा सोबती की उपन्यास **'जिंदगीनामा'** का प्रकाशन सन् १९७९ में हुआ । यह एक आँचलिक उपन्यास है । उपन्यास का समय प्रथम विश्वयुद्ध का है । इसमें विभाजन पूर्व पंजाब की कड़ी जिन्दगी की कुरूपता है । सन् १९८० में इसे **साहित्य अकादमी पुरस्कार** से सम्मानित किया गया । इसमें पंजाब की विगत शती का जिन्दगी का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है । 'जिन्दगीनामा' के केन्द्र में 'शाहनी' को रखा गया है, लेकिन हिंदू—मुसलमानों की सांझा—संस्कृति

172

के बीच के लम्बे काल प्रवाह में घटित सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों को बहुत प्रमाणिक रूप में अंकित किया गया है । अन्याय के प्रति हथियार उठाने वाली प्रतिरोध चेतना की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है । तात्कालीन सामाजिक एवं सांस्कारतिक जीवन की रूढ़ियों, प्रथाओं, परम्पराओं, मान्यताओं, अंधविश्वासों का वर्णन किया गया है तथा इनके विरोध में नारी पात्रों का चित्रण किया गया है, जो लेखिका के प्रगतिशील सृजनात्मक चेतना का परिचायक है ।

'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में नारी–जीवन की एक मनोवैज्ञानिक समस्या को उभारा गया है । उपन्यास रत्ती की कहानी कहता है । जो शैशवकाल में ही किसी अजनबी के बलात्कार का शिकार हो जाती है । इस घटना ने उसके जीवन को कटु बना दिया है । इस घटना ने उसे उसके दोस्तों, सामाजिक सम्बंधों से विलग कर दिया है, फलतः वह असहिष्णु, क्रूर और चिड़चिड़ी हो जाती है । बड़ी होने पर समाज उसे कामुक दृष्टि से देखता है । उपेक्षा, दुश्मनी और व्यंग की दीवारों ने उसे सभी से अलग कर दिया है ।

अंत में 'दिवाकर' के रूप में जब उसे सम्मान और स्वीकृति देने वाला व्यक्ति मिलता है, जिसके कुशल व्यवहारों से रत्ती अपनी मानसिक बीमारी से मुक्त हो जाती है । मानव–मन के मानसिक संघर्ष में अंततः रत्ती इसकी मुक्ति की तलाश में दृढ़ संकल्प के साथ सफल होती है जो उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे' के कथ्य को स्पष्ट करता है ।

'दिलो–दानिश' कृष्णा सोबती जी का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है । भारत में मुस्लिम–शासन के समय धीरे–धीरे एक मिली–जुली संस्कृति विकसित हो रही थी । इस तबके का खान–पान, वेशभूषा, लहजा सब कुछ मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित था । कृष्णा सोबती ने 'दिलो दानिश' में इस परिवेश और उसमें केन्द्रित कृपानारायण वकील की उलझी हुई जिन्दगी का, हवेली और फराशतखाना के द्वन्द्व का बहुत ही विश्वसनीय और मार्मिक चित्रण किया है । हवेली का प्रतिनिधित्व करने वाली कुटुम्बप्यारी और फराशतखाने का प्रतिनिधित्व करने वाली महकबानों दोनों के अंकन में लेखिका ने अद्भुत रचनाशीलता का परिचय दिया है । पारिवारिक संहिता, पत्नी और प्रेमिका के बीच झूलता कृपानारायण का चरित्र भी बहुत जोरदार और अपनी परिणति में अत्यन्त करुणा है।

विशेष रूप से महक बानों के चरित्र–निर्माण में उनकी रचनाशीलता अपने उत्कर्ष पर है । उसके परिणति जिस तेजस्विता से होता है, उसके सामने परम्परागत पत्नी का कद बहुत छोटा हो जाता है । यह उपन्यास महकबानों के औरत होने की कहानी को प्रस्तुत करती है । जब वह अंगिया, ओढ़नी और सलवार से भिन्न एक स्वतंत्र और फैसला लेने वाली औरत के रूप में संघर्ष करके अपनी पहचान बनाने में सफल होती है । जो नारी के द्वन्द्व एवं संकल्प की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को पुष्ट करता है ।

कृष्णा सोबती जी द्वारा रचित उपन्यास 'ऐ–लड़की' का प्रकाशन १९९१ में हुआ । 'ऐ–लड़की' पूर्णतः नारी–जीवन पर केन्द्रित उपन्यास है, जिसमें नारी के धीरे–धीरे बदलते दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है । इसमें नारी को सामाजिक ढाँचे के केन्द्र में रखकर, बनी–बनाई परम्परा के विरुद्ध नारी के रूप में रखने एवं देखने की कोशिश की गई है । अम्मू समाज में बुजुर्ग वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है, जिसमें सामाजिक बंधन, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्य की प्रधानता है तो दूसरी ओर बेटी आधुनिक समाज में व्याप्त जड़ता का प्रतिनिधित्व करते हुए परिवार और विवाह संस्कार पर प्रश्नचिन्ह लगाती है । परस्पर संवाद के माध्यम से एक दूसरे का चरित्र खुलते जाता है । अम्मू गृहस्थ–जीवन का पालन करते हुए जीवन भर यथार्थ धरातल पर संघर्ष करती है जबकि उसकी बेटी, आधुनिक मानसिकता के प्रभाव स्वरूप अपने अलग कल्पना–लोक में विचरण करती है । माँ और बेटी दोनों ही नारी–मुक्ति के पक्षधर है, पर दोनों के दृष्टिकोण में भेद है । मानसिक द्वंद्व एवं संघर्ष के बीच का चित्रण कृष्णा सोबती जी ने किया है ।

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'समय सरगम' का विषय एकदम अनूठा है । इसमें वृद्धों की दुनिया का ऐश्वर्य लोक रचने की कोशिश है । 'समय

सरगम' के बहाने कृष्णा सोबती जी ने बुजुर्गों की दुनिया में मस्ती के साथ ऐसे अनेक मनोभावों को सूक्ष्म स्तर पर अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, जिससे हमारा युवा वर्ग बेखबर है । वह प्रायः बुजुर्गों को समझने में गलती कर जाते है । उपन्यास की मुख्य पात्र 'अरण्या' और उसका पड़ोसी 'ईशान' के संवाद के माध्यम से जीवन के अंतिम पड़ाव के संघर्ष और संकल्प अभिव्यक्ति का प्रयास है । दिल्ली में जीते वरिष्ठ नागरिकों की यह कहानी जितनी प्रामाणिक है, उतनी ही संवेदन सिंचित भी ।

इसी प्रकार नारी समस्याओं का चित्रण हमें उनके, यारों के यार, तिन पहाड़, ऐ लड़की आदि उपन्यासों में भी मिलता है । जहाँ नायिका अलग—अलग संदर्भों में संघर्ष करती हुई दिखायी गई है । उन्होंने अपने कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' में २४ कहानियों को शामिल किया है । जिसमें लामा, सिक्का बदल गया, दादी अम्मा, बहनें, बदली बरस गयी, डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा इत्यादि के माध्यम से नारी विमर्श का विस्तृत अध्याय हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है । अपने यात्रा संस्मरण 'बुद्ध का कमण्डल : लद्दाख' के माध्यम से वहाँ की सांस्कृतिक बोध का दर्शन कराया है, तो अपने संस्मरण, विचार, आलोचना, के माध्यम से विभिन्न विषयों पर खुले रूप में अपने विचार व्यक्त किये है ।

वे अपने प्रबल एवं स्पष्ट लेखन के लिए सदैव याद किए जाएंगे । भाषा वैविध्य से अपनी रचनाओं में तहलका मचाने वाली कृष्णा सोबती अपनी भाषा और रचना से कभी समझौता नहीं की । यही कारण है कि १९५२ में लिखा उपन्यास चन्ना २०१९ में प्रकाशित हुई । वे तटस्थ लेखकों में से एक थी ।

निष्कर्ष :—

इस प्रकार हम पाते है, कि कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी पात्रों के चित्रण में द्वन्द्व एवं संकल्प की अभिव्यक्ति सहज रूप में दिखाई पड़ती है । समाज में फैले कुरीतियों, पुरूष प्रधानतावादी मानसिकता के घेरों को तोड़कर प्रगतिशील चेतना के साथ साहित्य सृजन किए है, जो एक साहित्यकार का समाज के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता है । जिसमें सोबती जी पूरी तरह खरे उतरती है । यही कारण है कि उनके साहित्य में समय की माँग, नया दृष्टिकोण, सामाजिक चेतना, का विभिन्न स्वरूप देखने को मिलता है ।

आज कृष्णा सोबती जी हमारे बीच नहीं रही लेकिन उनका साहित्यिक अवदान समाज को सदैव अपनी रचनाधर्मिता के साथ मार्गदर्शन करती रहेगी । अपने कथा—साहित्य में जिन पात्रों के माध्यम से नारी विमर्श की बुनियाद उन्होंने रखी है वह समाज में छटपटाती हुई नारियों को उनके सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक बंधनों से मुक्त करने के लिए प्रेरित करती रहेगी । निश्चय ही कृष्णा जी का साहित्यिक यात्रा युगीन यथार्थ और दायित्वबोध के लिए प्रकाश स्तम्भ के भाँति सम्पूर्ण मानव जगत को प्रकाशित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ :—

१. सोबती कृष्णा, डार से बिछुड़ी राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९५८

२. सोबती कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९७२

३. सोबती कृष्णा, जिंदगीनामा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९७९

४. सोबती कृष्णा, दिलो दानिश, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९९३

५. सोबती कृष्णा, समय—सरगम, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, २०००

६. सोबती कृष्णा, मित्रों मरजानी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६७

७. सोबती कृष्णा, यारों के यार, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६८

८. सोबती कृष्णा, तिन पहाड़, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण, १९६८

□□□